तीर्थ दर्शन

प्रथम खंड

प्रकाशक :

श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट (रजि.)

(श्री महावीर जैन कल्याण संघ प्रांगण)

चेन्नई - 600 007.

Research - Study - Compilation
First Published in 1980 by
Shree Mahaveer Jain Kalyan Sangh
96, Vepery High Road, Chennai - 600 007.

©

Copyright's Registered

Second Publication & Future Reprints
(As authorised by Shree Mahaveer Jain Kalyan Sangh)
By Shree Jain Prarthana Mandir Trust (Regd.)
96, Vepery High Road, Chennai - 600 007.
Year 2002.

आवश्यक आवेदन

अंजनशलाकायुक्त प्रतिष्ठित प्रभु प्रतिमाओं के फोटु प्रभु स्वरुप हैं, जिनमें दैविक परमाणुओं की उर्जा अवश्य रहती है । आजकल इन प्रभु प्रतिमाओं के फोटु केलेन्डर, पोस्टर, पत्रिकाओं आदि में छापे जा रहे हैं, क्या इन्हें संभालकर सही स्थान में रखना संभव है ? कब तक? आशातना से बचने हेतु इसके अंत परिणाम व अंत विसर्जन पर थोडा अवश्य सोचें व उचित निर्णय लें ।

कृपया इसमें छपे फोटुओं आदि की किसी भी प्रकार कापी न करें । आवश्यकता पर संपर्क करें । अवश्य सहयोग दिया जायेगा ।

-प्रकाशक-

Printed at :
"Srinivas Fine arts Ltd", Sivakasi - 626123. INDIA.

प्रस्तावना

भगवान महावीर की 25वीं निर्वाण शताब्दी के पावन उपलक्ष में आम उपयोगार्थ ई. सं. 1974 में प्रारंभ किया गया "तीर्थ-दर्शन" पावन ग्रंथ का संशोधनीय कार्य ई. सं. 1980 में सम्पूर्ण हुवा था, जिसका विमोचन ई. सं. 1981 में त्रीदिवसीय विराट समारोह के साथ यहाँ चातुर्मासार्थ विराजित प. पूज्य श्री जयन्तसेन विजयजी (वर्तमान प. पू. आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेनसुरिजी) की पावन निश्रा व भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई एवं तमिलनाडु के मुख्य मंत्री श्री एम. जी. रामचन्द्रन व कई विशिष्ट महानुभावों के सानिध्यता में सुसम्पन्न हुवा था । इस ढंग का इतिहास में प्रथम व उच्च कोटि का कार्य रहने के कारण सभी ने इस ग्रंथ की अति ही प्रशंसा व सराहना व्यक्त की ।

विमोचन पश्चात् तीर्थाधिराज भगवन्तों व आचार्य भगवंतो के कर कमलों में वह पावन ग्रंथ समर्पित किया गया । आचार्य भगवन्तों, मुनि भगवंतो, संस्थाओं के व्यवस्थापकों व कई विशिष्ट महानुभावों ने अपने पत्रों द्वारा मुक्त कंठ से इस ग्रंथ की प्रशंसा, अनुमोदना व सराहना की ।

यह बताते हर्ष होता है कि हमारे उक्त प्रकाशन के पश्चात् प्रायः सभी तीर्थ स्थानों पर यात्रीओं का आवागमन काफी बढ़ा है व तीर्थ-स्थलों का भी जीर्णोद्धार आदि होकर साधन-सुविधाएँ भी काफी बढ़ी है। यह पावन ग्रंथ दैविक परमाणुओं की उर्जा से भरा रहने के कारण पुण्योपार्जनकारी, पापविनाशकारी व आत्महितकारी है अतः बच्चों, युवकों एवं वृद्धजनों सभी के लिये अति उपयोगी सिद्ध हुवा है ।

इस पावन ग्रंथ का दुरुपयोग न हों उसीको ध्यान में रखकर इसकी कापी राइट प्रांरभ से रिजर्व करवाली थी । क्योंकि हमारा उद्देश्य सिर्फ संशोधन व प्रचार मात्र का था व अभी भी है ।

प्रकाशन के तुरन्त पश्चात् सभी प्रतियाँ वितरण हो चुकी थी परन्तु मांग जारी थी । अंग्रेजी में भी मांग रहने के कारण अंग्रेजी का भी अनुवाद करवाया गया । पुनः प्रकाशन का भी निर्णय लिया गया परन्तु संयोगवश प्रारंभ से इस कार्य के प्रेरक, प्रयासी, संशोधक व सम्पादक हमारे संस्थापक मानद मंत्री श्री यू. पन्नालालजी वैद की तबियत अस्वस्थ हो जाने के कारण कार्य आगे नहीं बढ़ सका । इस कार्य के संकलन में इनके अन्य सहयोगी भी थे, परन्तु कार्य आगे बढ़ने में तकलीफ महसूस हो रही थी क्योंकि समय काफी बीत चुका था ।

समय काफी बीत जाने के कारण सभी तीर्थ क्षेत्रों पर प्राचीनता व विशिष्टता के अतिरिक्त बाकी सभी विषयों में काफी परिवर्तन हो चुका था । अतः टाइप सेट भी पुनः करवाना आवश्यक हो गया था । फिल्म का रंग भी प्रायः परिवर्तन हो चुका था अतः लगभग पूरी सामग्री नई जुटनी थी ।

हमारा संशोधन का कार्य पूरा हो जाने के कारण हमने यही उपयुक्त समझा कि इस कार्य को संभालने के लिये श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट से अनुरोध किया जाय व उन्हें कापी राइट के साथ आवश्यक सहयोग भी दिया जाय । दिनांक 14.11.1999 को संभलाने का निर्णय लेकर पुरानी सारी फिल्म आदि के साथ कार्य इस ट्रस्ट को सोम्पा गया । आवश्यकतानुसार सहयोग देने का भी आश्वासन दिया गया । अतः अब यह प्रकाशन हमारे निर्देशनानुसार उनके द्वारा आवश्यकतानुसार होता रहेगा ।

आपको यह भी बताते हर्ष हो रहा है कि श्री जैन प्रार्थना मन्दिर हमारे प्रांगण में ही निर्मित है व उस ट्रस्ट में भी प्रायः सभी ट्रस्टीगण व कार्यकर्ता हमारे सदस्य ही हैं । संशोधन के पश्चात् पूर्ण धार्मिक क्षेत्र का कार्य रहने के कारण उस ट्रस्ट से हो रहा है क्योंकि हमारा क्षेत्र शिक्षण का है ।

प्रभु कृपा से इस बार भी प्रकाशन उच्च स्तर का हुवा है उसका श्रेय हमारे संस्थापक मानद मंत्री श्री यू. पन्नालालजी वैद (जो प्रारंभ से इस कार्य के प्रेरक, संशोधक व सम्पादक है) व उनके साथिओं को है । प्रभु की असीम कृपा से ही यह कार्य सुसम्पन्न हो सका है ।

प्रभु से प्रार्थना है कि ट्रस्ट का कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहे व यह तीर्थ-दर्शन का सन्देश घर-घर में पहुंचे जिससे सभी पुण्य के लाभार्थी बने इसी शुभ कामना के साथ

वास्ते, श्री महावीर जैन कल्याण संघ, (रजि.)

जे. मोतीचन्द डागा

अध्यक्ष

चेन्नई, मार्च 2002

प्रकाशकीय

हमारा श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट, मुख्य छात्र-छात्राओं में सुसंस्कारमय जीवन का निर्माण करने, उन्हें निरन्तर प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होता रहने व साथ ही साथ आम समाज को भी पूजा-सेवा-दर्शन का लाभ मिलता रहे, उसीको ध्यान में रखकर श्री महावीर जैन कल्याण संघ द्वारा अपने ही इस प्रांगण में प्रारंभ किये गये श्री जैन प्रार्थना मन्दिर का निर्माण कार्य करने व उसके सुसंचालन करने व अन्य धार्मिक उद्देश्यों के साथ श्री महावीर जैन कल्याण संघ के निर्देशनानुसार, प्रथक गढन कर रजिस्टर करवाया गया था ।

"तीर्थ-दर्शन" पावन ग्रंथ को पुनः व आगामी प्रकाशन हेतु श्री महावीर जैन कल्याण संघ ने हमारे ट्रस्ट से अनुरोध किया । यह कार्य अति ही विशाल जटिल व जिमेवारी का होते हुवे भी कार्य धार्मिक क्षेत्र का मुख्यतः तीर्थ स्थलों के प्रचार-प्रसार का रहने, इस पावन ग्रंथ के कार्य हेतु प्रारंभ से मुख्य आशीषदाता श्री पार्श्वप्रभु, आधेष्टायक श्री धरणेन्द्र-पद्मावती व योगीराज श्रीमद् विजय शांतीसूरीश्वरजी गुरु भगवंत हमारे इस प्रार्थना मन्दिर के नायक प्रारंभ से हमारे आशीषदाता रहने एवं इस पावन कार्य के प्रारंभ से प्रेरक संशोधक व संपादक आदि हमारे संस्थापक मानद मंत्री श्री यू. पन्नालालजी वैद ही रहने के कारण हमारे ट्रस्ट ने मंजूरी प्रदान की व भगवान महावीर की 26वीं जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया ।

इस कार्य को संभालते ही आगे बढ़ाने हेतु प्रथम कई प्रेसो से सम्पर्क साधकर भारत में उच्चतम स्तर की मानी जाने वाली प्रेस निर्धारित की गई । उच्च स्तर के पेपर का भी इंतजाम किया गया ।

कल्पतरुसम यह पावन ग्रंथ हर घर में पहूँच सके उसको ध्यान में रखकर यथाशक्य कम लागत रखने का निर्णय लेकर अग्रीम बुकिंग हेतु रुपये आठ सौ एक मात्र प्रति सेट के रखे गये ।

हम चाहते थे कि बुकिंग के आधार पर ही ग्रंथ की प्रतियाँ छपाई जाय अतः अग्रीम बुकिंग का श्री गणेश हमारे प्रार्थना मन्दिर में ही श्री पार्श्वप्रभु के सन्मुख भक्ति-भावना व दीप प्रज्वलता के साथ हर्षोल्लासपूर्वक किया गया । बुकिंग की अन्तीम तारीख 31.12.2000 रखी गई । बुकिंग की आम जानकारी पोस्टरों आदि द्वारा सभी तीर्थ स्थलों के मारफत व गुरु भगवंतो के मारफत सभी जगह दी गई। अकबार आदि में भी विज्ञापन दिया गया । प्रचार-प्रसार के लिये समय कुछ कम रहने के कारण यह भी स्पेशल तौर से निर्णय लेकर आम जाहिर किया गया कि कम से कम 108 ग्रंथों की बुकिंग करने या करवाने वालों के नाम सहयोगी के तौर पर इस पावन ग्रंथ में छापे जायेंगे । हालांकि इस बार इस ग्रंथ में पृष्ट मुद्रण दाता का नाम भी नहीं रखा है न शुभेच्छु, सहयोगी आदि के रुप कोई नाम । हम चाहते हैं कि ग्रंथ के अवलोकन के समय पाठक या दर्शक का ध्यान किसी भी कारण विचलित न होकर एकाग्रतापूर्वक प्रभु में तल्लीन रहे जिससे उनको पूण्य-निर्जरा का लाभ पूर्ण तौर से मिल सके ।

हमारे मानद मंत्री महोदय श्री यू. पन्नालालजी वैद जो पूर्व से ही इसके संशोधक, सम्पादक आदि है, अग्रीम बुकिंग करवाने के कार्य में साथ रहने के साथ-साथ तीर्थ-स्थलों से वर्तमान स्थिती की जानकारी पाने, नये फोटु मंगवाने कोई रहे हुवे प्राचीन तीर्थ-स्थलों की जानकारी पाने, संशोधन व सम्पादन करने, पूरे मेटर का पुनः टाइप सेटिंग करवाने में निरन्तर निःस्वार्थ जुटे हुवे रहे । उनके कठिन परिश्रम का परिणाम ही आज हमारे सामने है।

उनका व उनके सहयोगियों का मै अत्यन्त आभारी हूँ व हार्दिक धन्यवाद देता हूँ व प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे अनुपम कार्य करने की शक्ति उनमें प्रदान करें ।

सभी तीर्थ-स्थलों के व्यवस्थापकों, कर्मचारियों 108 ग्रंथो की अग्रीम बुकिंग करने व करवाने वाले महानुभावों बुकिंग करवाने में सहयोग देनेवाले मद्रास के सभी मन्दिरों के व्यवस्थापकों व अन्य व्यक्तिगत महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिनके सहयोग के कारण कार्य सुलभ हो सका ।

श्री महावीर जैन कल्याण संघ के सभी पदाधिकारियों, सदस्य महानुभावों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने ऐसे पुनित कार्य को करने का मौका हमें दिया और सहयोग देते रहे । हमारे सभी ट्रस्टीगणों को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने भी इस कार्य में रुचि लेकर भाग लिया ।

अंत में जिनेश्वर देव, अधिष्टायकदेव व गुरु भगवन्तों से प्रार्थना करता हूँ कि आपका शुभ आशीष हमपर निरन्तर बना रहे व ऐसे पुनित कार्यों का सुअवसर हमें प्राप्त होता रहे इसी शुभ कामना के साथ

वास्ते, श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट, (रजि.)
जी. विमलचन्द झाबख I.R.S. (Rtd.)
अध्यक्ष

चेन्नई, मार्च 2002

सम्पादकीय

देव-गुरु-धर्म की अशीम कृपा से इस कल्पतरुसम तीर्थ-दर्शन पावन ग्रंथ का जटिल कार्य प्रारंभ से अंत तक करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुवा था जो सात वर्ष की लम्बी अवधि में उन्हीं की कृपा से सुसम्पन्न हो पाया था । इस कार्य की परिकल्पना आदि का विवरण मेने प्रथम आवृति की भूमिका में दिया था जिसे पुनः इस ग्रंथ में ज्यों का त्यों पाठकों की जानकारी हेतु समाविष्ट है ।

उक्त प्रकाशन के पश्चात् निरन्तर मांग रहने के कारण हम चाहते थे कि पुनः प्रकाशन हो, कार्य भी पुनः चालू किया गया था परन्तु कभी मेरी शारीरिक कठिनाई के कारण तो कभी कुछ और कारण काम में रुकावट आती रही । ई.सं. 1995 में यहाँ चातुर्मासार्थ विराजित प. पूज्य अध्यात्मयोगी आचार्य भगवंत श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. का भी आशीर्वाद प्राप्त हुवा, परन्तु काम में कुछ न कुछ कारण रुकावट होती रही ।

श्री महावीर जैन कल्याण संघ के अनुरोध पर श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट ने नवम्बर 1999 में कार्य संभालकर महावीर भगवान की 26 वीं जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर प्रकाशन करने का निर्णय लिया।

इस बार निरन्तर काम चलने पर भी कार्य में कभी भी रुकावट नहीं आई । मेरा भी स्वास्थ्य बिलकुल ठीक रहा व कार्य समय पर अच्छे ढंग से सुसम्पन्न हुवा यह सब प्रभु कृपा का ही कारण है। शायद प्रभु को, चरम तीर्थंकर भगवान महावीर की 26 वीं जन्म शताब्दी महोत्सव के पावन अवसर पर ही व श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट द्वारा ही प्रकाशन करवाना था ।

इस बार बुकिंग के समय देखा गया कि अनेकों महानुभावों ने यह ग्रंथ देखा ही नहीं न उन्हें जानकारी। अतः इस ग्रंथ को खरीदने वालों से अनुरोध करता हूँ कि कृपया इस ग्रंथ का अवलोकन आपके जान-पहिचान वाले बंधुवों को अवश्य कराकर पुण्य के भागी बनें ।

प्रथम मैं सभी तीर्थाधिराज भगवंतों व गुरुभगवंतो को यह पावन ग्रंथ समर्पित करते हुवे प्रार्थना करता हूँ कि आपका शुभ आशीर्वाद निरन्तर बना रहे । आपके आशीर्वाद से ही कार्य सुसम्पन्न हो सका ।

आचार्य भगवंत श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म. सा. का मैं आभारी हूँ आपके आशीर्वाद निरन्तर मिलते रहे व आपने पाठकों व दर्शनार्थियों के उपयोगार्थ इस ग्रंथ की उपयोगिता व प्रतिफल के बारें में लिखकर भेजा जो इन ग्रंथों में समाविष्ट है । इसका असर हर पाठक पर अवश्य पडेगा जो उनके पुण्य-निर्जरा का कारण बनेगा।

सभी तीर्थों के व्यवस्थापकों व कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । आपके पूर्ण सहयोग से कार्य की सफलता में सुविधा रही । श्रीमान् विमलचंदजी चोरड़िया, भानपुरा (M.P.) वालों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हर तीर्थ के दोहे बनाकर ग्रंथ की और भी शोभा बढ़ाई है ।

इसके संकलन सम्पादन व अन्य कार्यों में हरदम सहयोग देनेवाले श्री अे. निहालचंदजी नाहर को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर इस कार्य में दिन रात निःस्वार्थ सेवा की । श्री हंसराजजी लूणीया को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग हर वक्त हर कार्य में रहा ।

श्री महावीर जैन कल्याण संघ के अध्यक्ष श्री मोतीचंदजी डागा, उपाध्यक्ष श्री शेंशमलजी पान्डीया, श्री जी. विमलचंदजी झाबख, कोषाध्यक्ष श्री अे. ताराचंदजी गुलेच्छा सहमंत्री श्री हंसराजजी लूणीया व सभी सदस्यों, श्री जैन प्रार्थना मन्दिर के सभी ट्रस्टी गणों एवं सभी शुभ चिन्तकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आप सभी की शुभ-कामना से ही कार्य निर्विघ्न सुसम्पन्न हो सका ।

श्रीनीवास फायन आर्ट लिमिटेड को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने छपाई के कार्य में पूर्ण रुची ली अतः काम में सुन्दरता आ सकी। अंग्रेजी भाषा के अनूवादक स्व. श्री रमणिक शाह का मैं आभारी हूँ जिन्होंने पूर्ण रूचि से कार्य सम्पन्न किया था । नये तीर्थों के गुजराती अनुवादक श्री उदय मेघाणी को भी कार्य सुसम्पन्न करने के लिये धन्यवाद देता हूँ ।

प्रेस कार्य में साथ रहने वाले श्री एस. कांतिलालजी रांका, उमेदाबाद वालों व श्री पी. गौतमचंद वैद को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने प्रेस के कार्य में हरवक्त निःस्वार्थ साथ में चलकर कार्य को सुन्दर ढंग से बनाने में सहायता प्रदान की ।

पुनः जिनेश्वरदेव, अधिष्टायक देव-देविओं व सभी आचार्य, मुनि भगवंतो को हार्दिक आभार प्रदर्शन करते हुवे प्रार्थना करता हूँ कि आपका आशीर्वाद निरन्तर हम पर बना रहे इसी शुभ कामना के साथ ....

सम्पादक व संस्थापक मानन्द मंत्री

यू. पन्नालाल वैद

चेन्नई, मार्च 2002

आमुख

(पूर्व प्रकाशित, प्रथम आवृति में से)

जैन धर्म में ही नहीं अन्य धर्मों में भी तीर्थ-स्थलों को अनादि काल से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है । तीर्थंकर भगवन्तों के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इन पाँच कल्याणकों से पवित्र हुए स्थान, प्रभु के समवसरण स्थल, प्रभु की बिहार-भूमि, प्रभु के चातुर्मास स्थल एवं उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से संबंधित स्थल, मुनि पुँगवों की तपोभूमि व निर्वाण भूमि, किसी सातिशय जिन प्रतिमाओं के चमत्कारों से प्रसिद्ध हुआ स्थान, विशिष्ठ कलात्मक मन्दिर व स्मारक, एक सौ वर्षों से ज्यादा प्राचीन मन्दिर व स्मारक-ये सब जैन परम्परा के पावन व पूज्यनीय स्थावर तीर्थ माने गये हैं।

उक्त स्थानों की यात्रा कर मानव अपना जन्म सफल बनाता है । इन पुनीत स्थलों के वातावरण शुद्ध व निर्मल तो होते ही है, उनमें एक ऐसी भी अतिशय शक्ति रहती है जिसके कारण दर्शक वहाँ पहुँचते ही उनके परिणाम निर्मल होकर एक अलौकिक शान्ति का अनुभव करते हैं ।

जैसे मीलों दूर हुई बरसात की हवा बहुत दूर तक अपनी मलयानिल ठण्डी हवा आंखो से ओझल रहते हुए भी हिलोरें देती है, जेसे आटे मे शक्कर मिलाने से फीका आटा भी मीठा हो जाता है, उसी प्रकार तीर्थंकर भगवन्तों, मुनि महाराजों व सैकड़ों वर्षों तक भाग्यशाली श्रद्धालु दर्शकों द्वारा सेवन किये गये स्थल भी उन शुद्ध परमाणुओं से मिल-जुलकर दर्शकों में एक ऐसी अलौकिक शान्ति की भावना प्रदान करते हैं जो यात्रियों के मनुष्य जन्म को सफल बना देते हैं ।

उक्त स्थलों की संख्या सहस्रों में हैं । लेकिन कई आज ओझल हैं तो कई खण्डहर के रूप में हैं और अपूजित हैं । पूजित स्थलों में से अनेकों मुख्य स्थलों का इस ग्रंथ के माध्यम से भक्त जनों को मार्ग दर्शन देने का प्रयास किया गया है । निःसन्देह इस ग्रंथ में उपलब्ध चित्ताकर्षक चित्रों के दर्शन से भक्तजन घर बैठे प्रभु को अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पण करके पुण्योपार्जन कर सकेंगे । कई तीर्थ-स्थलों के संबंध में अलग-अलग पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं । लेकिन भक्त जनों के लिये इन अलग-अलग पुस्तकों को संग्रहित कर रखना इतना सुलभ नहीं । इन सबको ध्यान में रखते हुए सारे तीर्थ-विवरणों को एक ही अमूल्य व अद्वितीय ग्रंथ के रूप में प्रकाशन करने का निर्णय हमारी संस्था ने लिया । इस ग्रंथ की उपयोगिता व महत्ता दर्शक व पाठक स्वतः अनुभव करेंगे ।

इस कार्य में अनेक आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों, पेढ़ी के व्यवस्थापकों व अन्य श्रावकगणों का सहयोग सराहनीय है । इन सबका मैं आभारी हूँ ।

इस कार्य के प्रारंभ से सम्पूर्ण होने तक का श्रेय हमारे, मानद मंत्री श्री यू. पन्नालालजी वैद को है जिनकी प्रेरणा, पूर्ण प्रयास व निरन्तर मेहनत से ही कार्य सुसम्पन्न हो सका । अतः मानद मंत्री महोदय व उनके सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिनके कारण हमारे संघ को यह महान ग्रंथ प्रकाशन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । इनकी निस्वार्थ सेवा संघ के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगी ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ अति उपयोगि सिद्ध होकर हर घर में पुण्य का संचार करेगा । पाठकों से अनुरोध है कि कृपया त्रुटियों के लिये क्षमा करें ।

अंत में श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता हूँ कि इस कल्पतरू महान ग्रंथ के दर्शकों व पाठकों को सुख समृद्धिवान बनावें ।

नवम्बर 1980

ए. मानकचन्द बेताला,
अध्यक्ष, श्री महावीर जैन कल्याण संघ

भूमिका

(पूर्व प्रकाशित, प्रथम आवृति में से)

विश्व के भूभाग में स्थित स्थलों में तीर्थ-स्थल विशिष्ट माने गये है । सभी धर्मों में तीर्थ स्थानों को विशेष महत्व दिया गया है। जैन तीर्थ-स्थल प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत विशिष्ट कला युक्त रहने के कारण अपना निराला स्थान रखते हैं । तीर्थ-स्थलों में पहुँचने पर वहाँ के पवित्र परमाणुओं से भाव निर्मल हो जाते हैं जिससे मानव भक्ति में लीन होकर अपूर्व पुण्य का संचय करता है । ये पावन तीर्थ आत्म-साधना के विशिष्ट स्थल हैं, जहाँ अनन्त भव्य आत्माओं ने सिद्धि प्राप्त की है व भविष्य में भी करेंगे। आदि काल से अनेकानेक भक्त जनों ने इन स्थलों की यात्रा कर अपना जीवन सफल बनाया है जिसका इतिहास साक्षी है ।

ऐसे पावन जैन तीर्थ-स्थलों को व्यापक रूप से प्रकाश में लाने व अन्य कई उद्देश्यों के साथ इस अपूर्व ग्रंथ की रचना की गई, जिसकी भूमिका प्रारंभ करने के पूर्व श्री महावीर जैन कल्याण संघ का परिचय देना मेरा कर्तव्य हो जाता है ।

श्री महावीर जैन कल्याण संघ की स्थापना :-

श्री महावीर जैन कल्याण संघ की स्थापना का मुख्य कारण "गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय" है । इस विद्यालय की स्थापना स्व. यतिवर्य श्री मंछाचन्द्रजी महाराज के कर कमलों द्वारा दिनांक 16 मार्च 1966 के शुभ दिन श्री चन्द्रप्रभ भगवान की छत्र-छाया में यहाँ वेपेरी सूलै में स्थित श्वेताम्बर जैन मन्दिर के उपाश्रय के एक कमरे में "श्री जैन विद्यालय" के नाम से हुई । इस विद्यालय को सुचारु रूप से चलाने हेतु "श्री महावीर जैन कल्याण संघ" का गठन कर दिनांक 1-7-1967 के शुभ दिन उसे पंजीकृत करवाके यह विद्यालय उक्त संघ के अंतर्गत किया गया जो दिनांक 22-1-1971 माघ शुक्ला बसन्त पंचमी के शुभ दिन दानदाताओं के इच्छानुसार परमपूज्य योगीराज श्री सहजानन्दघनजी महाराज के करकमलों द्वारा "गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय" के नाम से परिवर्तित हुआ । गुरुदेव की असीम कृपा से प्रारम्भ से ही विद्यालय तीव्रगति से प्रगति के पथ पर है । वर्तमान में इस विद्यालय में 1125 विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं व छात्र-छात्राओं के लिये बारहवीं कक्षा तक अलग-अलग पढ़ाई की व्यवस्था है । व्यावहारिक पढ़ाई के साथ-साथ संगीत व धार्मिक ज्ञान देने की भी व्यवस्था की गई है । आज यह विद्यालय मद्रास शहर के मध्य, खेल-कूद के लिये विशाल मैदान के साथ श्री महावीर जैन कल्याण संघ की निजी जगह में चल रहा है ।

संघ के उद्देश्य :-

गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय का संचालन करने व आगे बढ़ाने के अतिरिक्त जन-कल्याण के लिये हर प्रकार के अध्ययन व चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों की स्थापना करना, संचालन करना व सहयोग देना संघ के उद्देश्य हैं ।

"तीर्थ-दर्शन" ग्रंथ की परिकल्पना :-

वि. सं. 2024 में "अखिल भारत जैन-तीर्थ यात्रा संघ मद्रास" की 101 दिनों की मेरी यात्रा ही इस कार्य के प्रारंभ का मुख्य कारण है । उस यात्रा के दौरान अनेकों महानुभावों के सुझाव थे कि इस यात्रा का वर्णन व अनुभव प्रकाशित किया जाये ताकि भविष्य में यात्रियों को भी इसका लाभ मिल सके । उसको ध्यान में रखते हुए मैंने "भारत के जैन-तीर्थ व हमारे 101 दिनों की यात्रा के अनुभव" नामक पुस्तक लिखी । लेकिन कार्यवश विलम्ब होता गया । इतने में भगवान महावीर का पच्चीसवीं-निर्वाण शताब्दी-महोत्सव मनाने का सुअवसर आया व पूरे भारत में कई प्रकार के कार्य प्रारंभ हुए । गुरुदेव की असीम कृपा व अदृश्य प्रेरणा से मेरी भी इच्छा हुई कि कुछ ऐसा कार्य किया जाय जिसका सदियों तक लाभ मिल सके एवं संग्रहित सामग्री का प्रतिफल श्री महावीर जैन कल्याण संघ के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये काम आ सके । अतः इस पुस्तक को कुछ धार्मिक विवरणों के साथ व्यापक रूप देकर प्रकाशित करने की इच्छा हुई । अतः यह प्रस्ताव मैंने संघ की समिति के सम्मुख विचारार्थ रखा । उसपर समिति

ने विचार-विमर्श करके यह संशोधनीय कार्य प्रारंभ करने का निश्चय कर भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी महोत्सव की स्मृति में ऐतिहासिक ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया ।

''तीर्थ-दर्शन'' ग्रंथ प्रकाशन के उद्देश्य :

1 यात्रियों को जैन-तीर्थ स्थल संबंधी जानकारी देना : हर एक तीर्थ-स्थल का इतिहास तीर्थंकर भगवन्तों, आचार्य भगवन्तों, जैन राजा-महाराजाओं, मंत्रिओं या श्रेष्ठियों से संबंध रखता है । कुछ ऐसे भी तीर्थ है जो पुरातत्व दृष्टि व धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट माने गये हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यात्रीगण इन पावन तीर्थ-स्थलों के इतिहास की जानकारी पाकर प्रसन्नता व गौरव का अनुभव करेंगे व जिन्दगी में कम से कम एक बार हर तीर्थ-स्थल का दर्शन कर अपना जीवन सफल बनायेंगे । वर्तमान पीढ़ी के लिये ही नहीं भावी पीढ़ी के लिये भी यह ग्रंथ प्रेरणाप्रद होगा ।

2 युवावर्गों में धार्मिक भावना जागृत करना : युवावर्गों में धार्मिक भावना जागृत करना ही नहीं उसे कायम रखना भी इस वैज्ञानिक युग में अति आवश्यक है । इसके लिये यह ग्रंथ सहायक सिद्ध होगा। दर्शन के साथ-साथ धार्मिक भावना जागृत करने के लिये यह ग्रंथ बोधप्रद सचित्र इतिहास से अलंकृत किया गया है ।

साधारणतया पाठक उसी पुस्तक या ग्रंथ के लिये हाथ बढ़ाता है जिनमें चित्र हों । उनमें भी रंगीन चित्रों के देखते ही उस पुस्तक के अवलोकन की तीव्र इच्छा जागृत हो जाती है चाहे वह कोई भी पुस्तक हो । जब पाठक चित्र देखता है तो पढ़ने की भी कुछ इच्छा हो जाती है । इसी भांति इस अनमोल ग्रंथ के हर पृष्ठ पर अलग-अलग प्रकार के अलौकिक चित्र हैं जो प्रत्यक्षता प्रमाणित करते हैं । निःसंदेह हर एक वयस्क इस ग्रंथ को दूर से देखते ही एक बार तो पूरे पृष्ठों के अवलोकन की इच्छा करेंगे । इन अपूर्व चित्रों के दर्शन करते ही उनको इतिहास पढ़ने की इच्छा होगी व इतिहास की जानकारी होने से धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी । इस प्रकार बच्चों व नवयुवकों में धर्म के प्रति श्रद्धा व प्रभु के प्रति भक्ति बढ़ाने में यह ग्रंथ प्रेरणाप्रद होगा ।

3 तीर्थ-स्थलों का प्रचार होकर आवागमन बढ़ना : तीर्थ-स्थलों का आवागमन बढ़ना उतना ही आवश्यक है जितना धर्म का प्रचार । क्योंकि ये तीर्थ-स्थल ही अपने तीर्थंकर भगवन्तों, आचार्य भगवन्तों, व अपने पूर्वजों आदि की याद दिलाते हैं । इतिहास की प्रमाणिकता के ये स्मारक साक्षी स्वरूप हैं । इन्हें व्यवस्थित ढंग से संभालना हर जैन बन्धु का कर्तव्य हो जाता है । यहाँ का वातावरण इतना निर्मल व शुद्ध है जो मानव को भवसागर से पार लगा देता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस ग्रंथ के प्रकाशन से तीर्थ स्थलों पर यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा ।

4 बुजुर्गों को प्रतिदिन देवाधिदेव तीर्थाधिराजों के दर्शन का लाभ मिलना : यह प्रकृति का नियम है कि वृद्धावस्था आने पर प्रायः हर मानव में धर्म के प्रति विशेष रुचि जागृत होती है । उस वक्त उनको समय बिताने व आत्मशान्ति के लिये किसी प्रकार के धर्म कार्य में लीन होने की इच्छा होती है । उन भाग्यवान बंधुओं के लिये यह एक महान अति उपयोगी ग्रंथ सिद्ध होगा, जिसके माध्यम से उनको हर तीर्थाधिराज के साक्षातकृत दर्शन का लाभ मिलेगा । दर्शन करते ही तीर्थ का स्मरण हो आयेगा । हमेशा उनके लिये समय बिताना तो आसान होगा ही, प्रभु-दर्शन से उनको महान पुण्य का लाभ भी होगा व वे अत्यन्त शान्ति का अनुभव भी करेंगे । शास्त्रों में भी बताया गया है कि किसी कठिनाईवश तीर्थ यात्रा न कर सकने पर मानव घर बैठे-बैठे सात्विक्र भाव से तीर्थाधिराजों के भावपूर्वक दर्शन कर पुण्योपार्जन कर सकता है।

5 पर्यटकों व संशोधकों को मार्ग-दर्शन देना : आज के युग में यातायात के अनेकों साधन होने के कारण कई भारतीय व विदेशी पर्यटक अपने अमूल्य मानव भव में अधिक से अधिक दर्शनीय स्थलों के दर्शन की अभिलाषा रखते हैं । विश्व के विभिन्न स्थलों में बसे सर्वसुविधा-सम्पन्न कई सज्जन ऐसे स्थलों की खोज में घूमते रहते हैं जहाँ उनकी आत्मा को विशेष शान्ति मिल सके । विश्व में दर्शनीय स्थल तो अनेक हैं परन्तु शान्ति का अनुभव तो धार्मिक स्थलों पर ही हो सकता है जहाँ के परमाणु अत्यन्त निर्मल व शुद्ध होते है ।

जैन तीर्थ-स्थल उन धार्मिक स्थलों में हैं जहाँ उन्हें अपूर्व शान्ति का प्रत्यक्ष अनुभव तो होता ही है साथ ही उन्हें विशिष्ट कला व प्राकृतिक सौन्दर्य के अवलोकन का अमूल्य अवसर भी प्राप्त होता है ।

ऐसे स्थलों पर जाने की अभिलाषा रखने पर भी सही मार्ग-दर्शन के बिना पर्यटक कभी-कभी स्थल के निकट पहुँचने पर भी जाने से वंचित रह जाता है । अतः यह अमूल्य ग्रंथ उनके लिये मार्ग-दर्शन के रूप में रहेगा व अधिक से अधिक पर्यटक इन स्थलों के दर्शन का लाभ उठा सकेंगे ।

इसी भांति संशोधकों के लिये भी यह ग्रंथ उतना ही लाभप्रद होगा । निःसन्देह इस ग्रंथ में शोधकों के लिये ज्यादा विस्तार पूर्वक वर्णन नहीं है लेकिन हर स्थान के बारे में आवश्यक संकेत दिये गये हैं जिनके माध्यम से संशोधकगण अपने कार्य में प्रगति कर सकेंगे । मुझे पूर्ण विश्वास है कि संशोधकों को भी यह ग्रंथ उनके संशोधन-कार्य में सहारे के रूप में रहेगा ।

कार्य का प्रारंभ :-

कार्य को व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ाने के लिये संस्मृति ग्रंथ समिति व अन्य उपसमितियाँ बनाई गईं एवं "जैन कंट्रिब्यूशन टु तमिल लिटरेचर एण्ड आर्ट" विषय पर सेमीनार के विराट सम्मेलन के साथ दिनांक 17-3-74 को कार्य प्रारंभ हुआ । जिसमें तमिलनाडु के तात्कालीन राज्य-पाल महोदय, विधान सभा के अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय एवं अनेकों विद्वानों ने भाग लिया । दक्षिण भारत के इतिहास में इस ढंग का यह प्रथम सम्मेलन था, जिसका उल्लेख तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रकाशित तमिल अरसु नवम्बर 74 की पत्रिका में निम्न प्रकार हुआ है ।

The Sangh organised recently a Seminar on Jain contribution to Tamil Art and Literature and an Exhibition for 3 days in connection with 2500th Nirvan of Bhagwan Mahavir. The Seminar and Exhibition were the first of its kind in South India.

सहयोग पाने के लिये भ्रमण :-

विभिन्न जगहों के भाग्यशालियों के नाम सहयोगी के तौर पर इस अनमोल ग्रंथ में अंकित हो सके, इसी उद्देश्य को लेकर पूरे तमिलनाडु का भ्रमण किया गया । बड़े ही उत्साह के साथ सब जगह से आवश्यक सहयोग प्राप्त हुआ ।

तीर्थों की फोटोग्राफी :-

हम चाहतें थे कि इस ग्रंथ में प्रत्यक्ष रंगीन फोटो दिये जायँ ताकि दर्शक मुग्ध हो सके । इसी को ध्यान में रखते हुए यहाँ से फोटुग्राफरों के साथ दिनांक 16 जनवरी 1975 को एक डेलीगेशन भेजा गया। उन्हें सहयोग प्रदान करने के लिये तमाम पेढ़ी के व्यवस्थापकों से अनुरोध किया गया ।

यात्रा का अमूल्य अवसर व संघ की सेवा को ध्यान में रखकर डेलीगेशन के सदस्यों ने पूरे भ्रमण का खर्चा खुदने किया जिससे संघ को सिर्फ फोटोग्राफर का वेतन व फिल्म का मूल्य ही देना पड़ा । डेलीगेशन 141 दिनों का निरन्तर भ्रमण करके फोटोग्राफी लेकर दिनांक 5 जून 1975 को लौटा । इनके प्रयाण में जगह-जगह अनेकों आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवं विशिष्ट व्यक्तियों से वार्तालाप हुआ व सबने कार्य की सराहना करते हुए आशीर्वाद दिया ।

लोद्रवपुर में चमत्कार :

लोद्रवपुर में हुए चमत्कार का विवरण लोद्रवपुर तीर्थ के इतिहास में पृष्ठ 164 पर दिया गया है । ठीक फोटोग्राफी के समय अधिष्ठायक देव का साक्षात् में प्रकट होना इस ग्रंथ के लिये पार्श्वप्रभु का प्रत्यक्ष आशीर्वाद है । इस अनहोनी घटना ने इस ग्रंथ की महानता को प्रमाणित किया है । यह आशीर्वाद डेलीगेशन के लिए ही नहीं इस संस्था एवं इस ग्रंथ के दर्शकों व पाठकों के लिये भी अति दुर्लभ महत्वपूर्ण आशीर्वाद है । श्री धरणेन्द्रदेव के अतिदुर्लभ चित्र का इस ग्रंथ में समाविष्ठ होना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है । इस अलौकिक, अचिंतनीय, अवर्णनीय, अतिदुर्लभ घटना के रहस्य को समझना मेरी शक्ति के परे है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री धरणेन्द्रदेव की अनुकम्पा से दर्शकगण विशेष आत्मशांति का अनुभव करेंगे ।

ग्रंथ में तीर्थ-स्थलों का समावेश :-

भारत भूमि में असंख्य जैन-मन्दिर व स्मारक थे जिनका इतिहास साक्षी है । आज भी अनेकों खण्डहर रूप में अपूजित मन्दिर व गुफाएँ आदि हर प्रान्त में जगह-जगह पाये जाते हैं, तो कई परिवर्तित भी हो चुके हैं । तब भी आज पूजित जिन मन्दिरों की संख्या लगभग 15,000 से कम नहीं होगी जो भारत के तमाम प्रान्तों में स्थित हैं । इनमें लगभग 5 हजार मन्दिर सौ साल से ज्यादा प्राचीन होंगे । परन्तु इन सबका वर्णन संभव नहीं ।

हमने निम्न स्थानों के जिन मन्दिरों को यथा संभव इस ग्रंथ में समाविष्ठ किया है । ये प्राचीन स्थल आज भी गौरव के साथ अपने पूर्व प्रतिभा की याद दिलाते हैं । इस का श्रेय अपने परमपूज्य आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों को है जिनके उपदेश से हमारे पूर्वज कई राजा महाराजाओं, मंत्रियों व श्रेष्ठियों ने बड़ी ही लग्न व श्रद्धा से इन भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया । जिन पर जैन समाज को अतीव गौरव है । आज भी हम उन पावन स्थलों की यात्रा कर पुण्योपार्जन करके अपने को धन्य समझते हैं।

* तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ - जहाँ पर प्रभु के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान व मोक्ष-कल्याणक हुए हैं ।
* चमत्कारिक (अतिशय) या सिद्ध क्षेत्र ।
* कलाकृति आदि में विशिष्ट मन्दिर ।
* प्राचीन क्षेत्र - जहाँ का इतिहास सात सौ वर्षों के पूर्व का हो वहाँ का प्राचीन पूजित जिन मन्दिर।
* किसी भी पंचतीर्थी में स्थान पाने वाले स्थल ।

हमने कई पत्र-पत्रिकाओं में उक्त प्रकार के पावनस्थलों की जानकारी भेजने के लिये आम अनुरोध किया था । प्राप्त जानकारी, हमारा अनुभव व कई ग्रंथ एवं पुस्तकों आदि का सहारा लेकर इन पावन स्थलों को इस ग्रंथ में समाविष्ट किया है । पाठकों से अनुरोध है कि अगर और भी कोई स्थल रह गया हो तो हमें आवश्यक जानकारी भेजें । परिशिष्ट प्रकाशन की आवश्यकता समझी गई तो सुविधा होने पर प्रकाशित किया जायेगा । उस समय फोटो आदि प्राप्त होने पर उस स्थान को मिलाने का प्रयास किया जायेगा ।

इतिहास व अन्य जानकारी :-

हम चाहते थे कि इस ग्रंथ में तीर्थों की जानकारी के अतिरिक्त जैन-दर्शन, साहित्य व कला संबंधी भी कुछ जानकारी दें । परन्तु तीर्थों की जानकारी पाकर व्यवस्थित ढंग से गठन करने में ही इतना समय लग गया । जिसके कारण उन विषयों पर ध्यान नहीं दिया जा सका । अतः मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। हमने हर तीर्थ के विवरण को अनेकों ग्रंथ व पुस्तकों की मदद एवं प्रत्यक्ष प्राप्त जानकारी से गठन कर पेढ़ी व संबंधित अध्यक्ष महोदय को भेजकर उनसे आये सुझावों पर गौर करके तीर्थों के विवरणों को मुद्रित किया है । इस कार्य में तमाम तीर्थ स्थलों के व्यवस्थापकों व कर्मचारियों का जो सहयोग प्राप्त हुआ वह सराहनीय है । स्व. सेठ श्री कस्तूरभाई (सेठ आनन्दजी कल्याण पेढ़ी के प्रमुख) के साथ अनेकों बार पत्र व्यवहार एवं परस्पर वार्तालाप में इन्होंने हर वक्त अपने अमूल्य सुझाव दिये जो सराहनीय है ।

इस कार्य में कई आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों का भी सहयोग प्राप्त हुआ जिनमें यहाँ विराजित आचार्य श्री विक्रमसूरीश्वरजी व मुनि श्री राजयशविजयजी आदि का सहयोग उल्लेखनीय है ।

नमूने के तौर पर झांकी का विमोचन :-

हमने इस ग्रंथ के प्रारुप का विमोचन "तीर्थ दर्शन की एक झांकी" के रूप में पांच भाषाओं में दिनांक 23-4-78 चैत्री पूर्णिमा के शुभ दिन परमपूज्य श्री विशालविजयजी महाराज की निश्रा में यहाँ के राज्यपाल श्री प्रभुदासजी पटवारी के हाथों कराया था । इस विमोचन का मुख्य उद्देश्य इस ग्रंथ का प्रचार व आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवँ समाज के विशिष्ट व्यक्तियों के सुझावों को पाना था ताकि तीर्थों के इतिहास का गठन सुन्दर ढंग से किया जा सके । अतः हमने इस झांकी की प्रतियों को अनेकों आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवं 3000 से ज्यादा

श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिरों को भेजा । साथ में प्रचार के लिये पोस्टर भी भेजे । हमें प्रसन्नता है कि कार्य आम तौर पर पसन्द किया गया व अनेकों आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों के आशीर्वाद भी प्राप्त हुए ।

अग्रिम बुकिंग की आवश्यकता :-

माननीय सहायकों से हमने जितना सहयोग प्राप्त किया था उससे पाँच - छः गुना खर्च अधिक था। हम यह नहीं चाहते थे कि कर्ज लेकर आवश्यकता की पूर्ती की जाय । अतः कम मूल्य में अग्रिम बुकिंग करके आवश्यकता की पूर्ती करने का निर्णय लिया गया । इस प्रयत्न में भी समाज का प्रोत्साहन सहित सहयोग प्राप्त हुआ ।

विलम्ब का कारण :-

हम इस कार्य की व्यापकता का कोई अनुमान नहीं लगा सके थे । हमने समझा था कि फोटोग्राफी होते ही अन्य कार्य शीघ्र हो जायेंगे । परन्तु यह तो श्रीगणेश था । हमने यह भी सोचा था कि तीर्थों के इतिहास का गठन पेढ़ी वालों के सहयोग से शीघ्र हो जायेगा । लेकिन इसमें भी हमारा अनुमान गलत था । शोध कार्य के कारण विषय का गठन करने में अनुमान से कई गुना अधिक समय लगा। हमारा उद्देश्य था कि हर पेढ़ीवालों को जानकारी देकर व उनके सुझावों पर गौर करके विवरण मुद्रित करें। अतः पत्र व्यवहार में अत्यन्त समय निकल गया तथा निरन्तर कार्य करने पर भी इतना समय लग गया। नये ढंग का व अति विशाल कार्य होने के कारण समय का बराबर अनुमान नहीं लगाया जा सका अतः ग्रंथ नियत समय तक प्रकाशित नहीं हो सका । जिससे सहायक महानुभावों व अग्रिम बुकिंग कर्ताओं को लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ी इसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ व उनकी सहनशीलता के लिये मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन :-

हमने सूचित किया था कि ग्रंथ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया जायेगा । लेकिन प्रति भाषा के लिये न्यूनतम पांच सौ प्रतियों की बुकिंग आवश्यक है । हिन्दी व गुजराती की बुकिंग निर्धारित संख्या से ज्यादा हो पाई जिनका प्रकाशन कर रहे हैं । अब हम अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन का प्रयत्न करेंगे ताकि अन्य लोगों के लिये भी यह ग्रंथ उपयोगी हो सके ।

पर्यटकों से :-

तीर्थ स्थानों पर जैन-यात्रियों के लिए आवास का साधन व भोजनशालाओं की कई स्थानों पर सुविधाएँ हैं । अन्य लोगों को पूर्व पत्र व्यवहार करके या अपने साधन के साथ जाना सुविधाजनक होगा। जैन तीर्थ-क्षेत्र प्रायः एकान्त में शान्त व निर्मल वातावरण में स्थित हैं, जो अपनी विभिन्न शैली की कला के लिए प्रसिद्ध हैं । ऐसी कला के नमूने अन्यत्र कम मिलेंगे ।

आप सिर्फ पर्यटक के रूप में न जाकर अपने को यात्री समझें व प्रभु को भावपूर्वक वन्दन करें ।

आप भी विशिष्ट आनन्द का अनुभव करेंगे ।

जैन-यात्रियों के लिये कुछ मुख्य सुझाव :-

हमें यात्रा में जो अनुभव हुए उन्हें यात्रियों के ध्यान में लाना आवश्यक समझता हूँ ।

1 यात्रा शान्ति से करें चाहे यात्रा कम जगह की हों । तभी आप विशेष आनन्द का अनुभव करेंगे ।

2 यात्रा में खाने की कुछ सूखी सामग्री साथ रखें ताकि अधिक जगह की आप यात्रा कर सकेंगे । दिन में एक बार गरम रसोई का साधन मिल जाय तो स्फूर्ति के लिय पर्याप्त है ।

3 भ्रमण का मार्ग प्रथम निश्चित कर लें ताकि समय व्यर्थ न जाय ।

4 यात्रा में कम से कम सामान, ओढ़ने-बिछाने का साधन व पूजा के वस्त्र साथ रखें ।

5 यात्रा जाने के पहले वहाँ की विशेषता आदि की जानकारी पढ़कर जावें ताकि आप विशेष प्रफुल्लता का अनुभव करेंगे ।

6 तीर्थ-स्थानों पर संसारिक चर्चाओं का यथा-संभव त्याग करें तो आप अपूर्व शान्ति का अनुभव करेंगे ।

7 यात्रा का समय दिवाली के पश्चात् चैत्र तक ऋतु की दृष्टि से उत्तम है । वर्षा ऋतु में भ्रमण में कठिनाई पड़ सकती है । अगर सुविधापूर्वक तीर्थ स्थान तक पहुँच सकें तो हर ऋतु उत्तम है ।

8 लम्बी दूर का रास्ता रेल से पार करके वहाँ आस पास के तीर्थों की यात्रा बस या टैक्सी द्वारा करें तो सुगमता होगी व अधिक स्थानों की यात्रा हो सकेगी ।

9 तीर्थ स्थानों के बने हुए नियमों का पालन करें ताकि हम आशातना से बचते हुए यात्रा का प्रतिफल पा सकेंगे ।

10 हर वर्ष किसी तीर्थ की यात्रा अवश्य करें । उसमें भी अगर हर वर्ष अलग-अलग दिशा में जायेंगे तो धीरे-धीरे सभी तीर्थों की यात्रा हो जायेगी ।

11 स्पेशल बस द्वारा लम्बी यात्रा करनेवाले यात्री ध्यान रखें कि बस एक दिन में लगभग 250 कि. मी. से अधिक रास्ता तय नहीं कर सकती । उसी प्रकार से अपना मार्ग निश्चित करें । पहले, तीर्थ व अन्य स्थानों पर पत्र व्यवहार कर लें । रसोई का साधन अपने साथ रखें, अन्यथा मार्ग में कठिनाई होगी ।

आभार प्रदर्शन :-

मैं परमपूज्य आबू के महान योगीराज जगद्गुरु आचार्य सम्राट विजय श्री शान्तिसूरीश्वरजी का अत्यन्त आभारी हूँ जिनकी अदृश्य प्रेरणा से ही इतना विशाल कार्य उठाया व उनकी असीम कृपा व अलौकिक अदृश्य शक्ति से यह कार्य सम्पन्न हो सका । इनका आशीर्वाद ही संस्था के प्रगति का कारण है जो हम प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करते आ रहे हैं ।

हमारे भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री जतनलालजी डागा का मैं आभारी हूँ जिन्होंने, संस्था की स्थापना के समय से अपने अंत समय तक मुझे हर कार्य में उत्साहित करते हुए मार्गदर्शन दिया । इस ग्रंथ के कार्य में भी आप मुझे मार्ग दर्शन देते रहे जिसके कारण कठिनाईयाँ सुलभ होती गई । मैं स्व. स्वामीजी श्री रिषबदासजी, श्री मिलापचन्दजी दद्धा, श्री बहादुरसिंहजी बोथरा, श्री चम्पालालजी मरलेचा को भी आभार प्रदर्शन करता हूँ जिन्होंने इस कार्य में अति उत्साह के साथ भाग लिया था ।

स्व. शेठ श्री कस्तूरभाई, साहू श्री शान्तिप्रसादजी जैन, श्री सम्पतलालजी कोचर का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में अपने अमुल्य अनुभवों से मार्ग दर्शन दिया है ।

हमारे अध्यक्ष श्री मानकचन्दजी बेताला का मैं आभारी हूँ जो अपने अमूल्य अनुभवों से मार्ग-दर्शन देते आ रहे हैं । संघ के सभी सदस्यों, संस्मृति ग्रंथ समिति के मंत्री श्री लालचन्दजी जैन उपसमितियों के मंत्री श्री कपूरचन्दजी जैन, प्रकाशमलजी समदड़िया, केशरीमलजी सेठिया, पुखराजजी जैन, सायरचन्दजी नाहर, आर. के. जैन, आर. नागस्वामी व अन्य सदस्यों द्वारा प्रदान किये गये सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । माननीय सहायक महोदयों का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने कार्य के प्रारंभ में सहायता देकर उत्साह बढ़ाया है अतः उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

फोटोग्राफी डेलीगेशन के सदस्यों श्रीमान जीवनचन्दजी समदड़िया, सम्पतलालजी झाबख, आसकरणजी गोलेछा, ताराचन्दजी छजलाणी व गेनमलजी संचेती का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अपना 141 दिनों का अमूल्य समय निकालकर फोटोग्राफी के समय मेरे साथ रह कर सहयोग प्रदान किया है । फोटोग्राफी के लिए दुबारा जाते समय सादड़ी के प्रेस फोटोग्राफर श्री कांतिलालजी रांका ने अपने केमरों आदि सहित साथ रहकर निःस्वार्थ सेवा की है । अतः इन सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । तमाम पेढ़ी के व्यवस्थापकों को भी बारंबार धन्यवाद देता हूँ जिनके पूर्ण सहयोग से ही यह कार्य सुगमता पूर्वक सुन्दर ढंग से पूर्ण हो सका ।

श्री जयसिंगजी श्रीमाल, श्री कान्तिभाई शाह, श्री गेनमलजी संचेती, श्री भीखमचन्दजी वैद व हंसराजजी लूणिया का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने विवरण गठन करने व अन्य कार्यों में निरन्तर अपना समय निकाल कर पूर्ण सहयोग प्रदान किया है । अतः मैं इन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

परमपूज्य आचार्य श्री विशालसेनसूरिजी महाराज का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने ग्रंथ के प्रचार व अग्रिम बुकिंग करवाने में विशेष सहयोग प्रदान किया है । मैं उन सभी सहायकों का भी आभारी हूँ जिन्होंने बुकिंग करने व कराने में विशेष सहायता प्रदान की है । उन सब का विवरण देने में मैं असमर्थ हूँ एवं उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

मेसर्स प्रसाद प्रोसेस (प्रा.) लिमिटेड-मद्रास, ऑल इन्डिया प्रेस-पान्डिचेरी, जन्म भूमि प्रेस-बम्बई, फोटोग्राफर गोपालरत्नम्-मद्रास, एवं सी. हरिशंकर गुप्ता-मद्रास, को भी धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने प्रिंटिंग, फोटोग्राफी व संशोधन कार्य में अत्यन्त रुचि लेकर कार्य को सुन्दर ढंग से सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया है ।

जिन कार्यकर्ताओं ने अपना अमूल्य समय निकाल कर तन, मन या धन से निःस्वार्थ सेवा करते हुए इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान किया है उन सबका मैं अत्यन्त आभारी हूँ । कार्यकर्ताओं की इस प्रकार की सेवा के कारण कागज व मुद्रण व्यय के अतिरिक्त संघ के कार्यालय का व अन्य खर्चा नहीं के बराबर था अतः उनकी सेवा के लिये उन सबकों मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

अन्त में मैं उन सभी आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों व महानुभावों को आभार प्रदर्शन करते हुए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस पुनित कार्य मे अपना सहयोग प्रदान किया है ।

त्रुटियों के लिये क्षमा :-

इस ग्रंथ के लिये सामग्री जुटाने व प्रकाशन करने में जितना बन सका उतना यथासंभव कार्य किया गया है । परन्तु त्रुटियों का होना स्वाभाविक है अतः आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों, विद्वानों, तीर्थों के व्यवस्थापकों, सहायकों व पाठकों से निवेदन है कि कृपया त्रुटियों के लिये क्षमा करें व अपने अमूल्य सुझावों के साथ उन्हें हमारे ध्यान में लावें ।

तीर्थ क्षेत्र व तीर्थ यात्रा :-

तीर्थ क्षेत्र अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं । वहाँ के परमाणुओं में ऐसी अद्‌भुत शक्ति रहती है जो यात्रियों को भक्ति की तरफ सहज ही में खींच लेती है । जहाँ प्रभु के कल्याणक हुए हों, जहाँ प्रभु के चरण-स्पर्श हुए हों, जहाँ सदियों से प्रभु-भक्ति व पूजा हो रही हों, जहाँ असंख्य मुनियों ने तपस्या की हों, वहाँ विशिष्ट प्रकार के शुद्ध परमाणु फैले बिना नहीं रहते । वे आँखों से ओझल रहते हुए भी प्राणी की आत्मा पर ऐसा असर करते हैं कि वह बाह्य कौर्य-कलाप भूलकर प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाता है। जिस जगह के जैसे परमाणु होते हैं उसी ढंग का प्रभाव प्राणी की आत्मा पर पड़ता है । इसलिये परम्परा से हर धर्म में तीर्थ क्षेत्रों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । तीर्थ यात्रा करने वाला व्यक्ति भी उस दौरान एक अलग ही शान्ति का अनुभव करता है । यह शास्त्रासिद्ध तो है ही प्रत्यक्ष प्रमाण भी है, अनेकों ने अनुभव किया है व करते आ रहे हैं । तीर्थ यात्रा में भ्रमण करने वाले प्राणी प्रभु में खो जाते हैं व अपने कर्मों का क्षय करते हुए पुण्य का संचय करते हैं । अतः तीर्थ यात्रा पाप विनाशकारी, पुण्योपार्जनकारी, सर्वसुखकारी व आत्म हितकारी है जो मनुष्य के जीवन में अत्यन्त आवश्यक है ।

अंत में श्री जिनेश्वर व गुरु भगवन्तों को यह ग्रंथ समर्पण करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि "तीर्थ-दर्शन" घर घर की ज्योति बने व सभी पाठकों को तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा का सुअवसर प्राप्त हों । इसी अभिलाषा के साथ :-

नवम्बर 1980

यू. पन्नालाल वैद
मंत्री, श्री महावीर जैन कल्याण संघ

''तीर्थ - दर्शन''
के बारे में विभिन्न आचार्य, मुनि भगवन्तों के पूर्व में आये हुए अभिप्राय व आशीर्वाद पत्रों में से कुछ पत्रों का मुख्य अंश

तीर्थ दर्शन देखकर असाधारण आनन्द हुआ । जैन इतिहास मां यह प्रकाशन सब दृष्टि में श्रेष्ठ, अत्युपयोगी और महत्वपूर्ण बना है ।

पालीताना–दि. 1–2–1981 –आचार्य यशोदेवसूरि

तीर्थ दर्शन को जो भी एक बार पायेगा वह यह चाहेगा, मेरी चले तो हर घर में पहूंचादूं किन्तु उसके पास यदि एक से ज्यादा नकल न हुई तो वह हर किसको देने से मुकरने की कोशिश करेगा ।

बम्बई– दि. 16–5–1981 –आचार्य विशालसेनसूरि

મેં એ ગ્રંથ જોયો છે. બધા ચિત્રો અને ઈતિહાસ બધું ચિત્ત ને આકર્ષ તેવું છે. સમકિતની નિર્મળતાનું ઉત્તમ કારણ છે. એના દર્શન ભકિત વડે ભવ્ય જીવો જીવન ધન્ય બનાવે એ શુભ ભાવના

લીમ્બડી - દિ. ૧૪.૭.૧૯૮૧ - આચાર્ય માનતુંગસૂરિ

શ્રી તીર્થ દર્શન ભાગ - ૧-૨ નુ પ્રકાશન કરી શ્રી જૈન શાસન ની મહાન સેવા કરી છે. શ્રી જૈન શાસનની અધિક સેવા કરવાની શકિત પ્રાપ્ત થાઓ એજ એક અંતરની શુભ આશીષ

બિજાપુર - દિ. ૧૪-૭-૧૯૮૧ - આચાર્ય સુબોધસાગરસૂરિ

શ્રી મહાવીર જૈન કલ્યાણ સંઘ તરફ થી પ્રકાશન કરવામાં આવેળા તીર્થ - દર્શન નામક ઉત્મય ગ્રંથોએ, ભારત વર્ષોય વિધ-વિધ મહાન અને મંગલમય તીર્થોની ગૌરવાન્વિત ગાથાઓ છે.

કાગમલા (જાલોર) - આચાર્ય વિજય ભુવનશેખરસૂરિ

ચતુરવિધ શ્રી સંઘ દર હમેશા આ તીર્થ - દર્શન નો સદુપયોગ કરીને આત્મ દર્શન પામી નિસ્તાર પામે અમ્પર્થના

સૂરત - દિ. ૧.૮.૧૯૮૧ - આચાર્ય દેવેન્દ્રસાગરસૂરિ

तीर्थ क्षेत्रों का ऐतिहासिक परिचय देकर पूर्वजों के गौरवपूर्ण समर्पण भावना–भक्ति का वर्णन आज के भौतिक युग के युवा मानस में भक्ति की चिनगारी प्रगट करेगा, ऐसी में आशा रखता है ।

मद्रास–दि. 4–8–1981 –आचार्य पद्मसागरसूरि

ऐसा बढ़िया ऐतिहासिक–ग्रंथ प्रगट करने के लिये अभिनन्दन ।

दादर–मुम्बई–दि. 8–8–1981 –आचार्य कीर्तिसूरि

આ ગ્રંથ જૈન સમાજની અણમોળ મિલકત બનશે, સાથ-સાથે તમારો પરિશ્રમ અને ભાવના તમારા પુણ્યનો સંચય કરશે અને અનેક જીવોં ને પુણ્યના ભાગીદાર બનાવશે એમ હૂંમાનું છું.

મુમ્બાઈ - દિ. ૧૨-૮-૧૯૮૧ - આચાર્ય વિજય સદગુણસૂરિ

घर–घर में यह ग्रंथ रखने लायक है, यह ग्रंथ एक बार पढ़ने और दर्शन करने वाला तीर्थ यात्रा करने के लिये उत्साहित हुए बिना नहीं रहेगा ।

उदयपुर–दि. 18–8–1981 – आचार्य विजय देवसुरि, विजय हेमचन्द्रसूरि

शुभ आशीर्वाद–आपने तीर्थ–दर्शन प्रगट करने की योजना बनाई और प्रगट करने का शुभारंभ किया उस बदल आपको धन्यवाद ।

गोधरा– दि. – आचार्य यशोभद्रसूरि

"तीर्थ–दर्शन" ग्रंथ जैन शासन का शान बढ़ाने वाला अनमोल रत्न तैयार हुआ है ।

सूरत – दि. 4–9–1981 – आचार्य विजय भुवनभानुसूरि

વિષમકાલના વિષમય વાતાવરણની અસર ઘરાવતા આયુગમા સમ્યક દર્શનની વિશુદ્ધિનું મુખ્ય કારણ તીર્થ છે. તીર્થ-દર્શન સર્વશ્રેષ્ઠ ગ્રંથ બહાર પાડી સમાજ સેવાનુ અદભુત અને અનુમોદનીય કાર્ય કર્યું છે.

દાદર - દિ. ૪.૯.૧૯૮૧ - આચાર્ય દર્શનસાગરસૂરિ

તીર્થ - દર્શન ગ્રંથ સમ્યગ દર્શનની પ્રાપ્તિ શુદ્ધિ અને વૃદ્ધિ કરનાર છે. વૃદ્ધોને તથા બીમાર આત્માઓ ને તેનું દર્શન આલ્હાદકજનહીં કિન્તુ આત્મ શાન્તિ પ્રગટાવનાર છે એમ અમને લાગ્યુ છે.

સાબરમતી - અહમદાબાદ -દિ. ૧૫.૯.૧૯૮૧ -આચાર્ય ભદ્રંકરસૂરિ

आपने "तीर्थ-दर्शन" के भाग दो प्रकाशित कर जो समाज की सेवा की है । यह सदा स्मरणीय रहेगी । पुस्तकें देखकर अति प्रसन्नता हुई । शेष आनन्द ।

पालनपुर-दि. 22-9-1982 -आचार्य इन्द्रदिन्नसूरि

यह ग्रंथ "घर बैठे गंगा" का कर्तव्य पूर्ण करने वाला सिद्ध होगा ।

कोयम्बतूर-दि. 6-10-1981 -आचार्य विक्रमसूरि

तीर्थ दर्शन ग्रंथ का दर्शन करते हुवे हृदय हर्ष से नाच उठा आपकी महेनत की भूरी भूरी अनुमोदना हैं ।

इन्दोर- दि. 12-10-1981 -आचार्य यशोभद्र विजय, विमलभद्र विजय

આ ગ્રંથ ને જોતાં અનેરો આહલાદ અનુભવાય છે. જાણે સાક્ષાત એ ભવ્ય તીર્થોના દર્શન કરતાં કર્મ -નિર્જરા કરતા હોઈએ.

મુમ્બાઈ -દિ. ૨૪-૧૧-૧૯૮૧ -આચાર્ય ગુણસાગરસૂરિ

तीर्थ दर्शन के लिये जितना लिखे उतना कम ही है आपका श्रम भी सराहनीय है ऐसे और भी प्रकाशन आपके द्वारा अधिक हो ऐसा हमारा आशीर्वाद है ।

पाटण-दि. 18-5-1983 -आचार्य अशोकचन्द्रसूरि

"तीर्थ-दर्शन" को देखकर और दर्शन करते आत्मा को खूब आनन्द हुआ और प्रतिमा सबका यहाँ बैठे यात्रा हुवे ऐसा भाव प्रगट हुवे आनन्द ।

भावनगर-दि. 18-10-1983 -आचार्य विजय मोतिप्रभसूरि

तमारी संस्थाओ आवु महान तीर्थ दर्शन पुस्तक माहीती साभर छपाई छे अने एज कारणे घेर बेठा पण तीर्थ - दर्शन पुस्तक हाथमां होयतो वांचवाथी यात्रा नो लाभ थाय.

સમી - દિ. ૨૮-૧૦-૧૯૮૩ -આચાર્ય પ્રસન્નચન્દ્રસૂરિ

ग्रंथ खोलकर अन्दर के तीर्थ और मूल प्रतिमा का फोटु दर्शन कर भक्ति से भाव विभोर हो गया-ऐसे और सम्यगदर्शन माफक ग्रंथ प्रकाशित करके जैन शासन की शोभा और वृद्धि करो यही भव्य भावना ।

पालीताना-दि. 15-11-1983 -आचार्य विजयरामरत्नसूरि

घर बैठे हमेशा देवदर्शन का लाभ मिलेगा और उस सबका सम्यग दर्शन की शुद्धि भी होगी और मिथ्यात्वी आत्मा समकित भी प्रायः पावेगा यह मेरा अभिप्राय है।

द्रि. 28-11-1983 -आचार्य भद्रसेनसूरि

इसको हाथ में लेने के बाद छोड़ने का ही मन नहीं होता है । सैकड़ो ही नहीं अपितु हजारों भव्यात्मा इस ग्रंथ के अवलोकन मात्र से ही चित में तल्लीनता व मन ऐकाग्र बनाकर कर्म की निर्जरा कर सकेंगे।

बम्बई- दि. 17-2-1981 -मुनि श्री नयरत्न विजय, जयरत्न विजय

આ ગ્રંથ એક જૈન સંઘની અમૂલી દેન છે જોતાંજ મન-મોર નાચી ઉઠે અને એના એક-એક પાના દર્શન - મોહનીય કર્મનો ચૂરો બોલાવી સમ્યગ દર્શનની શુદ્ધિ કરાવી આપે, એવો સમર્થ આં ગ્રંથ કોણ ભલો ન ઈચ્છે.

ખંભાત - દિ. ૩૧-૭-૧૯૮૧ - મુનિ હેમચન્દ્રસાગર

तीर्थ दर्शन में सामान्य में निगूढ्तम वैशिष्ट्य का अनुसंधान किया है । प्रकाशन-प्रसारण का भविष्य प्रांजल एवं समुज्वल रहे यही दादा गुरुदेव से प्रार्थना

दि. 5-12-1981 -मुनि श्री महिमाप्रभसागर

तीर्थ दर्शन भक्ति धारा को प्रवाहित करने की दिशा में धार्मिक साथ ही ऐतिहासिक दृष्ठि से एक महत्वपूर्ण एवं अद्भुत उपयोगी साहित्यिक अनुष्ठान है ।

वीरायतन-राजगृह- दि. 9-6-1983 -उपाध्याय अमरमुनि

नवकार महामंत्र

परमेष्ठी नमस्कार सर्व मंगलों में प्रधान, विश्व प्रेम का प्रतीक व सर्व धर्मों का मूल है । इस महामंत्र में विश्व के तमाम अरिहंतादि देवों को नमस्कार किया है । इनके आलम्बन से राग द्वेष एवं मोह का क्षय होकर शुभ भाव प्रकट होते हैं । यह महामंत्र सभी पापों का नाशक है व सभी मंगलों का उत्पादक है । यह मंत्र दुष्कृत का क्षय करता है व पुण्य का संचार करता है । चौदह पूर्वी भी अन्त समय में इस महामंत्र का स्मरण करते हैं । इसीलिये इसको चौदह पूर्व का सार बताया है । श्री पंचपरमेष्ठी नवकार महामंत्र अचिन्त्य महिमा से मंडित है ।

इस महामंत्र से रोग निवारण मंत्र, लक्ष्मी-प्राप्ति मंत्र सर्वसिद्धिमंत्र अचिन्त्य फलप्रदायक मंत्र, पापभक्षिणी विद्यारूप मंत्र, रक्षा मंत्र, अग्नि निवारक मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, विवेक प्राप्ति मंत्र, सर्वकार्य साधक मंत्र, सर्व शान्ति-दायक मंत्र, व्यन्तर बाधा विनाशक मंत्र, आदि अनेक मंत्रों की उत्पत्ति हुई है, जिसकी कई आराधकों ने आराधना करके विस्तार पूर्वक वर्णन किया है ।

इसके स्मरण मात्र से शान्ति, तुष्टि व पुष्टि की प्राप्ति होती है । शास्त्रों में भी इस महामंत्र की आराधना को विश्व सुख का अद्वितीय कारण माना है । जैनागमों का प्रथम सूत्र श्री पंचमंगल याने नमस्कार सूत्र है ।

ऐसे महामंत्र का श्रद्धापूर्वक स्मरण कर देवाधिदेव तीर्थाधिराजों को भावपूर्वक वन्दन करें -

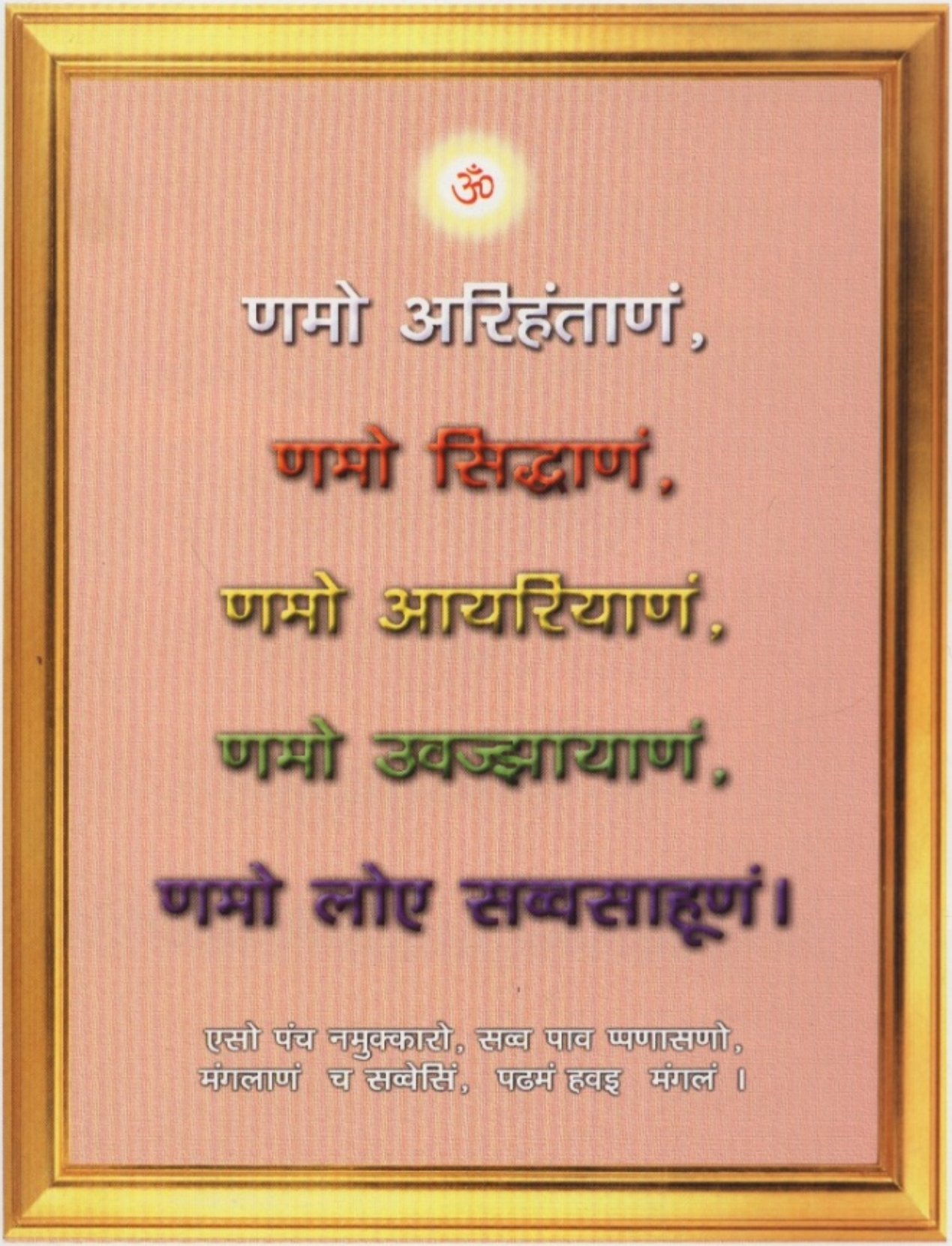
ॐ
णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं।
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

"तीर्थ - दर्शन"

पावन ग्रंथ का उपयोग एवं प्रतिफल

इस पावन ग्रंथ में सभी तीर्थाधिराज जिनेश्वर भगवंतों की अंजनशलाकायुक्त प्रतिष्ठित प्रतिमाओं के मूल फोटु रहने के कारण यह ग्रंथ शुभ दैविक परमाणुओं की ऊर्जा से ओत प्रोत है। जिसे हमेशा, हर समय ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार उपयोग में लें।

1. इस पावन ग्रंथ को जिनेश्वर देवों का स्वरूप ही समझकर अच्छे से अच्छे उच्च, शुद्ध, साफ व पवित्र स्थान में ही रखें जिससे वहां के परमाणुओं में शुद्धता व निर्मलता अवश्य रहेगी व शांति की अनुभुति होगी।
2. प्रति दिन अगर बन सके तो सामायिक ग्रहण करके कम से कम ५४ मिनट दर्शनार्थ उपयोग में लें जिससे सामायिक लाभ के साथ चित्त प्रभु में एकाग्र होने के कारण पुण्योपार्जन व निर्जरा का लाभ निरंतर मिलता रहेगा।
3. प्रतिदिन कम से कम एक तीर्थ का इतिहास अवश्य पढ़ें व दूसरों को पढने की प्रेरणा देवें जिससे सबको यात्रार्थ जाने की भावना जागृत होगी व वहां जाने से विशेष आनंद की अनुभुति होगी जो पुण्योपार्जन का साधन होगा।
4. कृपया झूठे मुंह, गंदे हाथों व चप्पल आदी पहनकर इस पावन ग्रंथ का उपयोग न करें और नहीं इसे अपवित्र जगह रखें ताकि पाप कर्म व आशातना से बच सकें।
5. हमेशा दर्शन स्वाध्याय करने से अनेः अनेः दैविक परमाणुओं में वृद्धी होगी जो सुख समृद्धि का कारण बनेगा।

यह तीर्थ दर्शन ग्रंथ है। जिसके माध्यम से हमें घर बैठे बैठे ही मानस यात्रा - भाव यात्रा करने का लाभ प्राप्त होता है। मूर्ति की तरह चित्र भी शुभ भाव जगाने में कामयाब होते हैं। इस दृष्टि से इस ग्रंथ का उपयोग आत्मा के लिये हितकर रहेगा।

परमात्मा के प्रति जो भक्ति भाव हमारे हृदय में प्रदिप्त होंगे वह हमें आत्मिक प्रसन्नता एवं आत्मिक उन्नति की ओर ले जायेंगे, यह निश्चित बात है। लि. कलाप्रभूर्णसूरि का धर्मलाभ

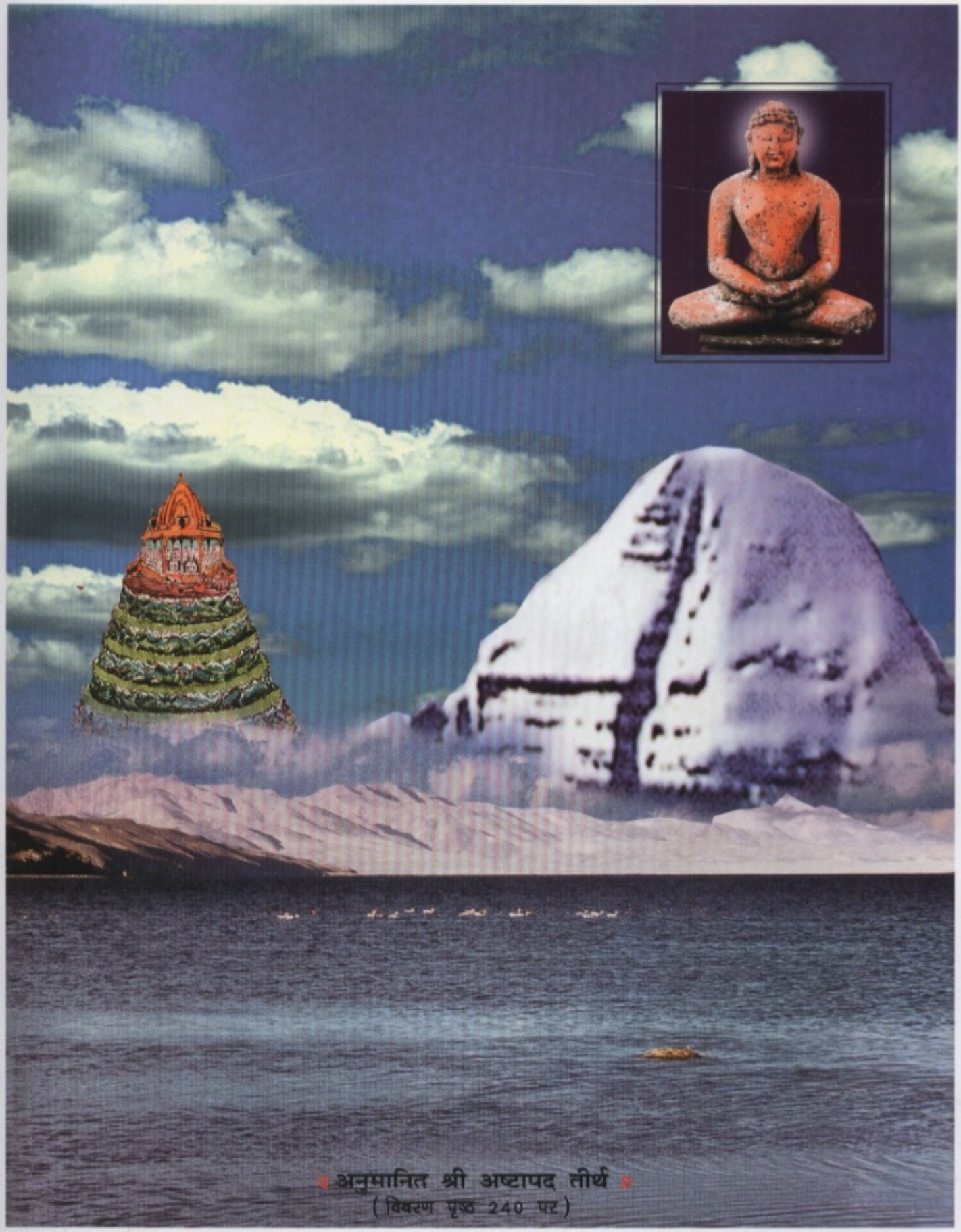

अनुमानित श्री अष्टापद तीर्थ

(विवरण पृष्ठ 240 पर)

भाग – 1

बिहार

1. क्षत्रियकुण्ड	22
2. ऋजुबालुका	28
3. सम्मेतशिखर	30
4. गुणायाजी	46
5. पावापुरी	48
6. कुण्डलपुर	54
7. राजगृही	56
8. काकन्दी	63
9. पाटलीपुत्र	66
10. वैशाली	70
11. चम्पापुरी	73
12. मन्दारगिरि	76

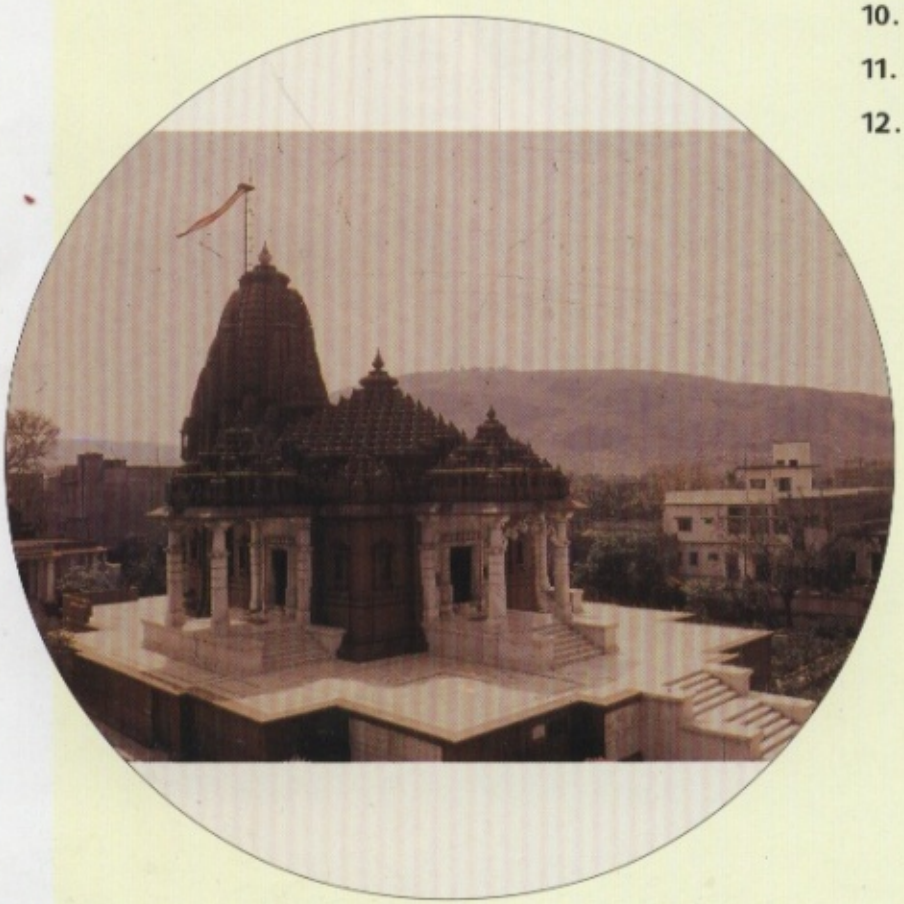

BIHAR & JHARKHAND

JAIN PILGRIM CENTRES

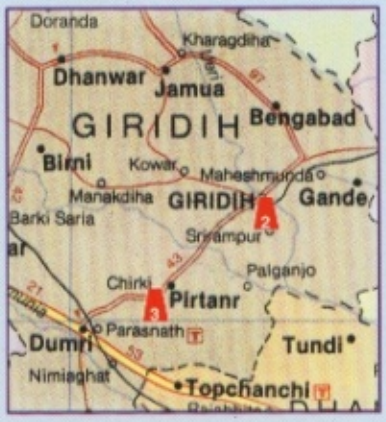

श्री क्षत्रियकुण्ड तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्यामवर्ण, लगभग 60 सें. मी. (श्वे. मन्दिर) ।

तीर्थ स्थल * क्षत्रियकुण्ड की तलेटी कुण्डघाट से लगभग 5 कि. मी. दूर वनयुक्त पहाड़ी पर ।

प्राचीनता * इस तीर्थ का इतिहास चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर के पूर्व से प्रारम्भ होता हैं । भगवान महावीर के पिता ज्ञात वंशीय राजा सिद्धार्थ थे । यह क्षत्रियकुण्ड उनकी राजधानी थी । राजा सिद्धार्थ की शादी वैशाली गणतन्त्र के गणाधीस राजा चेटक की बहिन त्रिशला से हुई थी । (दिगम्बर मान्यतानुसार त्रिशला को राजा चेटक की पुत्री बताया जाता है) राजा चेटक श्री पार्श्वनाथ भगवान के अनुयायी थे । राजा चेटक की यह प्रतिज्ञा थी कि उनकी पुत्रियों का विवाह भी जैनी राजाओं से ही किया जायेगा । कितनी धर्म श्रद्धा थी उनमें । राजा सिद्धार्थ अति ही शांत, धर्म प्रेमी व जन-प्रिय राजा थे । क्षत्रियकुण्ड के निकट ही ब्राह्मणकुण्ड नाम का शहर था । वहाँ ऋषभदत्त नाम का ब्राह्मण रहता था । उनकी धर्म पत्नी का नाम देवानन्दा था । आषाढ़ शुक्ला छठ के दिन उतराषाढ़ा नक्षत्र में माता देवानन्दा ने महा स्वप्न देखे । उसी क्षण प्रभु का जीव अपने पूर्व के 26 भव पूर्ण करके माता की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ । स्वप्नों का फल समझकर माता-पिता को अत्यन्त हर्ष हुआ । गर्भकाल में उनके घर में धन-धान्य की वृद्धि हुई ।

परन्तु जैन मतानुसार तीर्थंकर पद प्राप्त करने वाली महान आत्माओं के लिये क्षत्रियकुल में जन्म लेना आवश्यक समझा जाता है । परन्तु मरीचि के भव में किये कुलाभिमान के कारण उन्हें देवानन्दा की कुक्षी में जाना पड़ा,-ऐसी मान्यता है । श्री सौधर्मेन्द्र देव ने देवानन्दा माता के गर्भ को क्षत्रिय-कुल के ज्ञात वंशीय राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशला की कुक्षी में स्थानान्तर करने का हरिण्यगमेषी देव को आदेश दिया । इन्द्र के आज्ञानुसार देव ने सविनय भक्ति भाव पूर्वक आश्विन कृष्ण तेरस के शुभ दिन उतराषाढ़ा नक्षत्र में गर्भ का स्थानांतर किया, उसी क्षण विदेही पुत्री माता श्री त्रिशला ने तीर्थंकर जन्म सूचक महा-स्वप्न देखे । इस प्रकार भगवान का जीव माता त्रिशला की कुक्षी में प्रवेश

भगवान महावीर जन्म स्थान मन्दिर का बाह्य दृश्य- क्षत्रियकुण्ड

चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान – क्षत्रियकुण्ड

हुआ । (दि.मान्यतानुसार गर्भ का स्थानान्तर नहीं हुआ माना जाता है) गर्भ काल के दिन पूर्ण होने पर माता त्रिशला ने वि. सं. के 543 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को अर्द्ध रात्री के समय सिंह लक्षण वाले पुत्र को जन्म दिया । इन्द्रादि देवों ने प्रभु को मेरू पर्वत पर ले जाकर जन्माभिषेक महोत्सव अति ही आनन्द व उल्लास पूर्वक मनाया । राज दरबार में भी बधाइयाँ बंटने लगी । कैदियों को रिहा किया गया । जन साधारण में खुशी की लहर लहराने लगी । प्रभु का माता त्रिशला की गर्भ में प्रविष्ट होने के पश्चात् समस्त क्षत्रियकुण्ड राज्य में धन-धान्यादि की वृद्धि होकर चारों तरफ राज्य में सुख शान्ति बढ़ी जिस कारण जन्म से बारहवें दिन प्रभु का नाम वर्द्धमान रखा । (दि. मान्यतानुसार प्रभु का जन्म वैशाली के अन्तर्गत वासुकुण्ड में या नालन्दा के निकट कुण्डलपुर में हुआ बताया जाता है ।

श्री वर्द्धमान बचपन से ही वीर व निडर थे । एक बार प्रभु अपने मित्रों के साथ आमलकी क्रीड़ा कर रहे थे । तब एक देव सर्प का रूप धारण कर झाड़ से लिपट गया । प्रभु ने निडरता से सर्प को पकड़कर एक ही झटके से अलग कर दिया । वही देव बालक बनकर इनके खेल क्रीड़ा में शामिल हुआ हारने पर उसे घोड़ा बनना पड़ा । उसपर ज्यों ही प्रभु असवार हुए कि विराट व भयानक रूप करके वायुवेग से दौड़ने लगा । प्रभु का मुष्टि प्रहार होते ही वह शान्त हो गया। देवने विनयपूर्वक वन्दन करते हुए प्रभु को वीर नाम से संबोधित किया इस कारण प्रभु महावीर भी कहलाए । प्रभु निडर व वीर तो थे ही विद्या में भी निपुण व ज्ञानवान थे । जिसका वर्णन देव द्वारा पाठशाला में उनके उपाध्याय के सन्मुख पूछे गये प्रश्नों आदि में मिलता है ।

प्रभु की इच्छा शादी करने की न होने पर भी उनके माता-पिता की प्रसन्नता के लिये राजा समरवीर की पुत्री श्री यशोदा देवी के साथ उनका विवाह सम्पन्न हुआ । (दि. मान्यता में शादी नहीं हुई मानी जाती है) श्री यशोदा देवी की कुक्षी से प्रियदर्शना नाम की कन्या का जन्म हुआ, जिसका विवाह श्री जमाली नामक राजकुमार के साथ हुआ । जमाली प्रभु की बहिन सुदर्शना के पुत्र थे । प्रभु 28 वर्ष के हुए तब उनके माता-पिता का देहान्त हुआ एवं प्रभु के भ्राता

लछवाड मन्दिर का दृश्य – क्षत्रियकुण्ड

श्री महावीर भगवान–लछवाड़

श्री नन्दीवर्धन ने राज्य भार संभाला । प्रभु का दिल संसारिक कार्यों में नहीं लग रहा था जिससे वे हर वक्त व्याकुल रहते थे । भ्राता नन्दीवर्धन से बार–बार आग्रह करने पर उन्होंने दीक्षा के लिये अनुमति प्रदान की । प्रभु ने राज्य सुख त्यागकर प्रसन्नचित्त वर्षीदान देते हुए "ज्ञात खण्ड" उपवन में जाकर वस्त्राभूषण त्याग करके पंच–मुष्टि लोचकर वि. सं. के 513 वर्ष पूर्व मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी के शुभ दिन अति कठेर दीक्षा अंगीकार की । उसी वक्त प्रभु को मनः पर्यव ज्ञान उत्पन्न हुआ । उस समय प्रभु की उम्र 30 वर्ष की थी । जब प्रभु ने वस्त्राभुषणों का त्याग किया तब इन्द्र ने देवदुश्य अपर्ण किया । इस प्रकार प्रभु के तीन कल्याणक इस पावन भूमि में हुए । दीक्षा के पश्चात् प्रभु को अनेकों उपसर्ग सहने पड़े । प्रभु ने निडरता, धर्मवीरता, सहनशीलता, मानवता, निर्भयता व दयालुता दिखाकर विश्व में मानव धर्म के लिये एक नई ताजगी प्रदान की ।

कल्प–सूत्र में भी प्रभुवीर की जन्म–भूमि क्षत्रियकुण्ड का वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है । सं. 1352 में श्री जिनचन्द्रसूरिजी के उपदेश से वाचक राजशेखरजी, सबुद्धिराजजी, हेमतिलकगणी, पुण्य कीर्तिगणी आदि श्री बड़गाँव (नालन्दा) में विचरे थे तब वहाँ के ठाकुर रत्नपाल आदि श्रावकों ने सपरिवार क्षत्रियकुण्ड ग्राम आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा की थी जिसका वर्णन प्रधानाचार्य गुर्वावली में आता है ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में आचार्य श्री लोकहिताचार्यसूरिजी क्षत्रियकुण्ड आदि की यात्रार्थ पधारने का उल्लेख श्री जिनोदयसूरिजी प्रेषित विज्ञप्ति महालेख में मिलता है। सं. 1467 में श्री जिनवर्धनसूरिजी द्वारा रचित पूर्वदेश चैत्य परिपाटी में क्षत्रियकुण्ड का वर्णन है । सोलहवीं सदी में विद्वान श्री जयसागरोपाध्यायजी द्वारा यहाँ की यात्रा करने का वर्णन दशवेकालिकवृति में मिलता है । मुनि जिनप्रभसूरिजी ने भी अपनी तीर्थ माला में क्षत्रियकुण्ड का वर्णन किया है । कवि हंससोमविजयजी द्वारा सं. 1565 में रचित तीर्थमाला में भी इसका वर्णन है– अठारहवीं सदी में श्री शीलविजयजी ने इस तीर्थ की बड़े ही सुन्दर ढंग से

व्याख्या की है । सं. 1750 में सौभाग्यविजयजी ने भी अपनी तीर्थ माला में यहाँ का वर्णन किया है। इस प्रकार यहाँ का वर्णन जगह-जगह पाया जाता है। वर्तमान में पहाड़ी पर यही एक मन्दिर है जिसे जन्मस्थान कहते हैं ।

निकट ही अनेकों प्राचीन खण्डहर पड़े हैं जो कुमारग्राम, माहणकुण्डग्राम, ब्राह्मणकुण्डग्राम, मोराक आदि प्राचीन स्थलों की याद दिलाते हैं ।

तलहटी में दो मन्दिर हैं, जिन्हें च्यवन व दीक्षा कल्याणक स्थलों के नाम से संबोधित किया जाता है ।

विशिष्टता * इस पवित्र भूमि में वर्तमान चौबीसी के चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के च्यवन जन्म व दीक्षा आदि तीन कल्याणक होने के कारण यहाँ की महान विशेषता है । प्रभु ने अपने जीवनकाल के तीस वर्ष इस पवित्र भूमि में व्यतीत किये । अतः इस स्थान की महत्ता का किन शब्दों में वर्णन किया जाय ।

यहाँ के जन्म स्थान का मन्दिर ही नहीं अपितु इस पवित्र भूमि का कण-कण पवित्र व वन्दनीय है । आज भी यहाँ का शान्त व शीतल वातावरण मानव के हृदय में भक्ति का स्रोत बहाता है । यहाँ पहुँचते ही मनुष्य सारी सांसारिक व व्यवहारिक वातावरण भूलकर प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है । इसी पवित्र भूमि में प्रभु की, आत्म कल्याण व विश्व कल्याण की भावना प्रबलता से उत्तेजित हुई थी । कहा जाता है उस समय जगह-जगह यवनों आदि का जोर बढ़ता आ रहा था । धर्म के नाम पर निर्दोषी जीवों की बलि दी जाती थी । नारी को दासी के स्वरूप माना जाता था । दास-दासियों की प्रथा का जोर बढ़ता आ रहा था, निर्बल नर-नारियों को दास-दासियों के तौर पर आम बाजार में बेचा जा रहा था । जिनके पास ज्यादा दास-दासियाँ रहती थीं उन्हे पुण्यशाली समझा जाता था । प्रभु ने आत्म कल्याण एवं विश्व कल्याण के लिये उत्तेजित हुई भावना को साकार रूप देने का निश्चय करके राजसुख को त्यागा व दीक्षा लेकर आत्मध्यान में लीन हो गये । अनेकों प्रकार के अति कठिन उपसर्ग सहन करके प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया । प्रभु ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, व अपरिग्रह को महान धर्म ही नहीं परन्तु मानव धर्म बताया जिनके अनुकरण मात्र से ही आत्मा को शांति मिल सकती है । आज के युग में भी मानव समाज इन तत्वों के अनुसरण की आवश्यकता महसूस कर रहा है । प्रभु ने नारी को भी धर्म प्रचार करने का अधिकार दिया । प्रभु ने जाति भेद का तिरस्कार किया व विश्व के हर जीव-जन्तु के प्रति करुणा का उपदेश दिया । यह सब श्रेय इसी पवित्र भूमि को है जहाँ हमारे देवाधिदेव प्रभु का जन्म हुआ व उनकी असीम कृपा के कारण आज जैन धर्म विश्व का एक महान धर्म बना हुआ है व उसके सिद्धान्तों के अनुकरण की विश्व आज भी आवश्यकता महसूस कर रहा है । भगवान महावीर की वाणी आज भी हर मानव, पशु, पक्षी आदि के लिये कल्याणकारी है व हमेशा के लिये कल्याणकारी रहेगी ।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में क्षत्रियकुण्ड पहाड़ पर यही एक मन्दिर है । यहाँ की तलहटी कुण्डघाट में दो छोटे मन्दिर हैं जहाँ वीर प्रभु की प्रतिमाएँ विराजित हैं । इन स्थानों को च्यवन व दिक्षा कल्याणक स्थानों के नाम से संबोधित किया जाता है । लछवाड़ में एक मन्दिर हैं । ये सारे श्वेताम्बर मन्दिर हैं ।

कला और सौन्दर्य * यहाँ प्रभु वीर की प्राचीन प्रसन्नचित्त प्रतिमा अति ही कलात्मक व दर्शनीय है । प्रतिमा के दर्शन मात्र से मानव की आत्मा प्रफुल्लित हो उठती है । तलहटी से 5 कि. मी. पहाड़ पर का प्राकृतिक दृश्य अति ही मनोरंजक हैं ।

मार्ग दर्शन * नजदीक के रेल्वे स्टेशन लखीसराय, जमुई व कियुल ये तीनों लछवाड़ से लगभग 30-30 कि. मी. है । इन स्थानों से बस व टेक्सी की सुविधा है । सिकन्दरा से लछवाड़ लगभग 10 कि. मी. है, यहाँ पर भी बस व टेक्सी की सुविधा है । लछवाड़ से तलहटी (कुण्डघाट) 5 कि. मी. व तलहटी से क्षत्रियकुण्ड 5 कि. मी. है । लछवाड़ में धर्मशाला

है, जहाँ तक पक्की सड़क है । आगे तलहटी तक भी सड़क है, कार व बस जा सकती है । तलहटी से 5 कि. मी. पहाड़ की चढ़ाई पैदल पार करनी पड़ती है । लछवाड़ से बस स्टेण्ड आधा कि. मी. हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये लछवाड़ में बड़ी धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, जनरेटर, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा हैं । पहाड़ पर पानी की पूर्ण सुविधा है ।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी,
पोस्ट : लछवाड़ - 811 315
जिला : जमुई, प्रान्त : बिहार,
फोन : 06345 - 22361.

प्रभु महावीर जन्म स्थान मन्दिर - क्षत्रियकुण्ड

श्री ऋजुबालुका तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, चतुर्मुख चरण-पादुकाएँ, श्वेत वर्ण, लगभग 15 सें. मी. । (श्वे. मन्दिर) ।

तीर्थ स्थल * बराकर गाँव के पास बराकर नदी के तट पर ।

प्राचीनता * आज की बराकर नदी को प्राचीन काल में ऋजुबालुका नदी कहते थे । श्वेताम्बर शास्त्रानुसार भगवान महावीर ने जंभीय गाँव के बाहर व्यावृत चैत्य के निकट ऋजुबालुका नदी के तट पर श्यामक किशान के खेत में शालवृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ला 10 के दिन पिछली पोरसी के समय विजय मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त किया । तत्काल इन्द्रादिदेवों ने समवसरण की रचना की । विरीत ग्रहणादि लाभ का अभाव जानते हुवे भी प्रभु ने कल्प आचार के पालन हेतु क्षणचर धर्मोपर्दशना दी । यह प्रथम देशना निष्फल गई, जिसे आश्चर्यक (अछेरा) माना गया है ।

आज जनक नाम का गाँव यहाँ से 4 कि. मी. है । वहाँ शाल वृक्षों युक्त घना जंगल भी है । जनक गाँव का असल नाम जंभीय गाँव भी कहा जाता है एक मतानुसार राजगृही से 56 कि. मी. की दूरी पर वर्तमान जमुई गाँव है वही जंभीय है व उसके पास की क्वील नदी ही ऋजुबालुका है । लेकिन अभी तक कोई प्रमाणिकता नहीं मिलती है ।

वि. की सोलहवीं सदी में पं. श्री हंससोमविजयजी, सत्रहवीं सदी में श्री विजयसागरविजयजी व श्री जयविजयजी, अठारहवीं सदी में श्री सौभाग्यविजयजी ने अपनी तीर्थ मालाओं में यहाँ का वर्णन किया है ।

इन तीर्थ मालाओं में गाँव के नाम आदि के नामों में कोई मतभेद नहीं है । सिर्फ दूरी एक-एक तीर्थ माला में अलग-अलग बताई है । सम्भवतः समय-समय पर पगडंडी या सड़क का रास्ता बदले जाने से दूरी में कुछ फर्क हुआ हो । अतः इसी स्थान पर, जहाँ सदियों से मानते आ रहे हैं, भगवान को केवलज्ञान हुआ मानना ही उचित है ।

श्री महावीर भगवान केवलज्ञान स्थल ऋजुबालुका

यहाँ का अन्तिम जीर्णोद्धार वि. सं. 1930 में होने का उल्लेख शिलालेखों में उत्कीर्ण है ।

विशिष्टता * चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के बारह वर्ष की घोर तपश्चर्या के कारण व केवलज्ञान प्राप्ति के कारण यहाँ के परमाणु अत्यन्त पवित्र बन चुके है । जिस स्थान पर भगवान की 12 वर्ष घोर तपश्चर्या होकर केवलज्ञान हुआ उस जगह की महानता अवर्णनीय है ।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है ।

कला और सौन्दर्य * नदी तट पर स्थित मन्दिर का दृश्य अतीव रोचक है । मन्दिर की निर्माण शैली भी अति सुन्दर है । इसी नदी में भगवान महावीर की एक प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जिसकी कला अति सुन्दर है जो मन्दिर में विराजमान हैं ।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेल्वे स्टेशन गिरडिह 12 कि. मी. है । यह स्थल गिरडिह-मधुबन (सम्मेतशिखर) मार्ग पर स्थित है । गिरडिह से बस व टेक्सी की सुविधा है । मधुबन से यहाँ की दूरी 18 कि. मी. है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती है ।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली का साधन है ।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी, बराकर पोस्ट : बन्दरकुपी - 825 108. जिला : गिरडिह, प्रान्त : बिहार, फोन : 08736-24351.

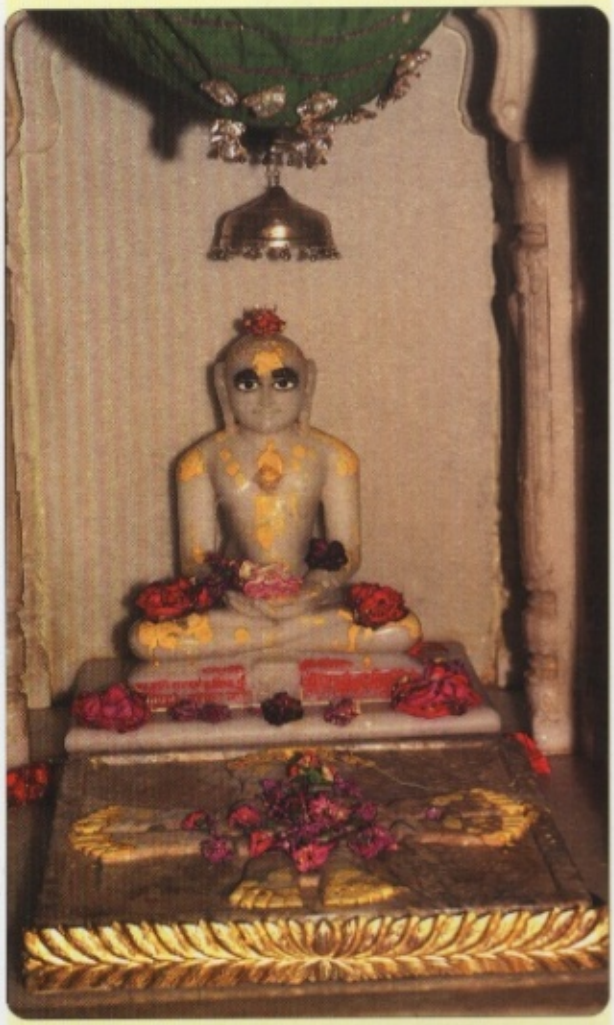

श्री महावीर भगवान चरण पादुकाएँ - ऋजुबालुका

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शामलिया पार्श्वनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग 90 सें. मी., जल मन्दिर (श्वेताम्बर मन्दिर) ।

तीर्थ स्थल * मधुबन के पास समुद्र की सतह से 4479 फुट ऊँचे सम्मेतशिखर पहाड़ पर, जिसे पार्श्वनाथ हिल भी कहते हैं ।

प्राचीनता * यह सर्वोपरि तीर्थ सम्मैतशैल, सम्मैताचल, सम्मेतगिरि, सम्मेतशिखर, समाधिगिरि व समिधीगिरी आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है । वर्तमान में यह क्षेत्र सम्मेतशिखर व पारसनाथ पहाड़ के नाम से जाना जाता है । वर्तमान चौबीसी के बीस तीर्थंकर इस पावन भूमि में तपश्चर्या करते हुए अनेक मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । पूर्व चौबीसियों के कई तीर्थंकर भी इस पावन भूमि से मोक्ष सिधारे हैं - ऐसी अनुश्रुति है ।

यह परम्परागत मान्यता है कि तीर्थंकरों के निर्वाण स्थलों पर सौधर्मेन्द्र ने प्रतिमाएँ स्थापित की थी ।

बीच के कई काल तक के इतिहास का पता नहीं । लगभग दूसरी शताब्दी में विद्यासिद्ध आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी आकाशगामिनी विद्या द्वारा यहाँ यात्रार्थ आया करते थे-ऐसा उल्लेख है । उसी भांति प्रभावक आचार्य श्री बप्पभट्टसूरिजी भी अपनी आकाशगामिनी विद्या द्वारा यात्रार्थ आते थे । विक्रम की नवमी शताब्दी में आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी सात बार यहाँ यात्रार्थ आये व उपदेश देकर जीर्णोद्धार का कार्य करवाया था ।

तेरहवीं सदी में आचार्य देवेन्द्रसूरिजी द्वारा रचित वन्दारुवृति में यहाँ के जिनालयों व प्रतिमाओं का उल्लेख है । कुंभारियाजी तीर्थ में स्थित एक शिलालेख में श्री शरणदेव के पुत्र वीरचन्द द्वारा अपने भाई, पुत्र प पौत्रों आदि परिवार के साथ आचार्य श्री परमानन्दसूरिजी के हाथों सं. 1345 में यहाँ प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हैं ।

चम्पानगरी के निकटवर्ती अकबरपुर गाँव के महाराजा मानसिंहजी के मंत्री श्री नानू द्वारा यहाँ मन्दिरों के निर्माण करवाने का उल्लेख सं. 1659 में भट्टारक ज्ञानकीर्तिजी द्वारा रचित "यशोधर चरित" में है ।

सं. 1670 में आगरा निवासी ओशवाल श्रेष्ठी श्री कुंवरपाल व सोनपाल लोढ़ा संघ सहित यहाँ यात्रार्थ आये जब जिनालयों का उद्धार करवाने का उल्लेख श्री जयकीर्तिजी ने "सम्मेतशिखर रास" में किया है । आज तक अनेकों आचार्य मुनिगण व श्रावक, श्राविकाएँ एवं संघ यहाँ यात्रार्थ पधारे हैं ।

मुनिवरों ने सम्मेतशिखर तीर्थमाला, जैन तीर्थमाला, पूर्व देश तीर्थमाला, आदि अनेकों साहित्यों का सर्जन किया है जो आज भी गत सदियों की याद दिलाते है ।

वि. सं. 1649 में बादशाह अकबर ने जगद्गुरु आचार्य श्री हीरविजयसूरिजी को श्री सम्मेतशिखर क्षेत्र भेंट देकर विज्ञप्ति जाहिर की थी । कहा जाता है कि उक्त फरमान पत्र की मूल प्रति अहमदाबाद में श्वेताम्बर जैन श्री संघ की प्रतिनिधि संस्था सेठ आणन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी में सुरक्षित है ।

वि. सं. 1747 से 1763 के दरमियान श्री सौभाग्यविजयजी, पं. जयविजयसागरजी, हंससोमविजयगणिवर्य, विजयसागरजी आदि मुनिवरों ने तीर्थमालाएँ रची हैं जिनमें भी इस तीर्थ का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है ।

सं. 1770 तक पहाड़ पर जाने के तीन रास्ते थे। पश्चिम से आनेवाले यात्री पटना, नवादा व खडगदिहा होकर एवं दक्षिण-पूर्व तरफ से आने वाले मानपुर, जैपुर, नवागढ़, पालगंज होकर व तीसरा मधुबन होकर आते थे । पं. जयविजयजी ने सत्रहवीं सदी में व पं. विजयसागरजी ने अठारहवीं सदी में अपने यात्रा विवरण में कहा है कि यहाँ के लोग लंगोटी लगाते हैं । सिर पर कोई वस्त्र नहीं रखते । सिर में गुच्छेदार बाल है । स्त्रियाँ कद रूपी भयभीत लगती हैं । उनके सिर पर वस्त्र रखने व अंग पर कांचलियाँ पहिनने की प्रथा नहीं है । कांचली नाम से गाली समझती हैं । किसी स्त्री को सिर ढँके व कांचली पहिने देखने से उनको आश्चर्य होता है । भील लोग धनुष बाण लिये घूमते हैं । जंगल में फल, फूल विभिन्न प्रकार की औषधियाँ, जंगली जानवर व पानी के झरने हैं ।

कुछ तीर्थ मालाओं में बताया है कि झरिया गाँव में रघुनाथसिंह राजा राज्य करता है । उनका दीवान सोमदास है । जो भी यात्री यात्रार्थ आता है उससे आठ आना कर लिया जाता है । एक और वर्णन है कि कतरास के राजा श्री कृष्णसिंह भी कर लेते हैं ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान - जल मन्दिर - सम्मेतशिखर

रघुनाथपुर गाँव से 4 मील जाने पर पहाड़ का चढ़ाव आता है ।

यह भी कहा जाता है कि पालगंज यहाँ की तलेटी थी । यात्रीगणों को प्रथम पालगंज जाकर वहाँ के राजा से मिलना पड़ता था । राजा के सिपाही यात्रियों के साथ रहकर दर्शन करवाते थे ।

उस काल में पहाड़ पर क्या स्थिति थी उसका कोई खुला वर्णन नहीं मिल रहा हैं ।

वि. सं. 1805 में मुर्शिदाबाद के सेठ महताबरायजी को दिल्ली के बादशाह अहमदशाह द्वारा उनके कार्य से प्रसन्न होकर जगतसेठ की उपाधि से विभूषित करने व सं. 1809 में मधुबन कोठी, जयपार नाला, जलहरी कुण्ड, पारसनाथ तलहटी का 301 बीघा, 'पारसनाथ पहाड़' उन्हें उपहार देने का उल्लेख हैं ।

वि. सं. 1812 में बादशाह अबुअलीखान बहादुर ने पालगंज-पारसनाथ पहाड़ को करमुक्त घोषित किया था ।

उल्लेखानुसार पता लगता है कि जगतसेठ की प्रबल इच्छा थी कि, सम्मेतशिखर महातीर्थ के मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो । उसी काल में तपागच्छीय पं. श्री देवविजयगणि यात्रार्थ पधारे व जगतसेठ ने महातीर्थ के उद्धार का संकल्प लिया व अपने सातों पुत्र व परिवार जनों को बुलाकर जीर्णोद्धार करवाने का निर्णय लिया गया । कार्य भार अपने चौथे पुत्र श्री सुगालचन्द व जैसलमेर गद्दी के मुनीम श्री मूलचन्दजी को संभलाया। उस बीच जगत्सेठ श्री महताबरायजी का देहान्त हो गया । वि. सं. 1822 में बादशाह आलम ने उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री खुशालचन्द को जगत्सेठ की उपाधि से विभूषित किया ।

सम्मेतशिखर के उद्धार का कार्य पूर्ववत चल रहा था । खुशालचन्द सेठ का प्रयास था कि 20 तीर्थंकरों के निर्वाण स्थानों की प्रमाणिकता प्राप्त कर उन स्थानों पर चिन्हिकाएँ बनवाई जाएँ । इस इच्छा से वशीभूत जगतसेठ यदा-कदा हाथी पर बैठकर मुर्शिदाबाद से यहाँ आते रहते थे, परन्तु स्थलों का कोई निर्णय नहीं

वनयुक्त पहाड़ों के बीच जलमन्दिर का एक अपूर्व दृश्य - सम्मेतशिखर

हो सका । इससे पता चलता है कि पुराने मन्दिरों या टूँकों के चिह्न काल की गति से स्थानांतरित हो गये होंगे या मिट चुके होंगे ।

पं. देवविजयजी की प्रेरणा से जगत्सेठ ने अट्ठमतप करके पद्मावती देवी की उपासना की । देवी ने स्वप्न में प्रत्यक्ष होकर कहा कि पहाड़ के ऊपर जहाँ-जहाँ केशर के स्वस्तिक चिह्न बने वे ही मूल स्थान माने जाएँ व स्वस्तिक सख्यानुसार तीर्थंकरों के निर्वाण स्थान समझकर चौतरे, स्तूप व चरण-पादुकाओं का निर्माण हों ।

उसी प्रकार दैविक शक्ति से 20 निर्वाण स्थान निश्चित हुए, जहाँ पर चबूतरे बनवाये गये व देरियाँ बनाकर स्तूप व चरणपादुकाएँ वि. सं. 1825 माघ शुक्ला वसंत पंचमी के शुभ दिन तपागच्छीय भट्टारक आचार्य श्री धर्मसूरिजी वरदहस्ते प्रतिष्ठित करवाये जाने का उल्लेख है । वर्तमान में स्थित चरण पादुकाओं पर वि. सं. 1825 माघ शुक्ला तृतीया विराणी गोत्र श्री खुशालचन्द नाम अंकित है । शायद जगत्सेठ की लग्न शीलता से जीर्णोद्धार सम्पन्न होकर श्री खुशालचन्दजी वीराणी के हस्ते प्रतिष्ठा हुई हो या जगतसेठ स्वयं विरांणी गौत्र के हों । माघ शुक्ला तृतीया को अंजनशलाका होकर माघ शुक्ला पंचमी को प्रतिष्ठा हुई हो ।

इसी समय पहाड़ पर जलमन्दिर, मधुबन में सात मन्दिर, धर्मशाला व पहाड़ के क्षेत्रपाल श्री भोमियाजी का मन्दिर आदि बनवाये गये । इन मन्दिरों की भी इसी मुहूर्त में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने का उल्लेख है ।

मन्दिर आदि का प्रबन्ध कार्यभार श्री श्वेताम्बर जैन संघ को सौंपा गया । इस प्रकार भाग्यवान जगत्सेठ श्री महताबचन्दजी की भावना सफल हुई । जगत्सेठ द्वारा किया गया यह महान कार्य जैन शासन में सदा अमर रहेगा । इस तीर्थ का यह इक्कीसवाँ जीर्णोद्धार माना जाता है ।

तदुपरान्त अनेक जैन संघ यात्रार्थ आने लगे । पहाड़ की चोटियों पर स्थित स्तूप, चबूतरे, चिन्हिकाएँ मुक्त आकाश के नीचे आच्छादनहीन होने से भयंकर आँधी, वर्षा, गर्मी, सर्दी व बन्दरों के शरारती कार्यों के कारण पुनः उद्धार की आवश्यकता हुई । अतः वि. सं. 1925 से 1933 के दरमियान उद्धार करवाकर विजयगच्छ के जिनशान्तिसागरसूरिजी, खरतरगच्छ के जिनहंससूरिजी व श्री जिनचन्द्रसूरिजी के हस्ते पुनः प्रतिष्ठा करवाई ।

श्री अजितनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री सम्भवनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री अभिनन्दन भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री सुमतिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

यह बाईसवाँ उद्धार माना गया । इस उद्धार के समय भगवान आदिनाथ, श्री वासूपूज्य भगवान, श्री नेमीनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान तथा शाश्वत जिनेश्वरदेव श्री ऋषभानन, चन्द्रानन, वारिषेण व वर्धमानन की नई देरियों का निर्माण हुआ। मधुबन में भी कुछ नये जिनालय बने ।

यह पहाड़ जगत्सेठ को भेंट स्वरूप मिला हुआ होने पर भी जगत्सेठ द्वारा दुर्लक्ष्य हो जाने से पालगंज राजाको दे दिया गया था । ई. सं. 1905-1910 के दरमियान पालगंज राजा को धन की आवश्यकता पड़ी । राजा ने पहाड़ बिक्री करने या रहन रखने का सोचा उसपर कलकत्ता के रायबहादुर सेठ श्री बद्रीदासजी जौहरी मुकीम एवँ मुर्शीदाबाद निवासी महाराज बहादुरसिंहजी दुगड़ ने राजा की यह मनोभावना जानकर अहमदाबाद के सेठ आणन्दजी कल्याणजी पेढ़ी को यह पहाड़ खरीदने के लिये प्रेरणा दी व सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया । श्री आणन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने खरीदने की व्यवस्था करके प्राचीन फरमान आदि देखे सब अनुकूल पाने पर दिनांक 9-3-1918 को रुपये दो लाख बयालीस हजार राजा को देकर यह पारसनाथ पहाड़ खरीदा गया । जिससे पहाड़ पुनः जैन श्वेताम्बर संघ के अधीन आया । इस कार्य में इन महानुभावों का सहयोग सराहनीय है । उनकी प्रेरणा व सहयोग से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका ।

वि. सं. 1980 में आगमोद्धारक पूज्य आचार्य श्री सागरानन्दसूरिजी यहाँ यात्रार्थ पधारे । तब उनकी इच्छा पुनः जीर्णोद्धार करवाने की हुई । उनके समुदाय की विदुषी बालब्रह्मचारिणी साध्वीजी श्री सुरप्रभाश्रीजी के प्रयास से वि. सं. 2012 में जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ होकर सं. 2017 में पूर्ण हुआ । यह तेईसवाँ उद्धार था ।

विशिष्टता * भूतकाल की चौबीसियों में भी अनेक तीर्थंकरों ने यहाँ पर मोक्षपद पाया-ऐसी अनुश्रुति है । वर्तमान चौबीसी के 20 तीर्थंकर यहाँ पर से मोक्ष सिधारे हैं । अन्य चार तीर्थंकरों में श्री आदिनाथ भगवान अष्टापद से, श्री वासूपूज्य भगवान चम्पापुरी से, श्री नेमिनाथ भगवान गिरनारजी से, श्री महावीर भगवान पावापुरी से मोक्ष को प्राप्त हुए है । इनके अतिरिक्त अनन्त मुनिगण यहाँ पर कठोर तपश्चर्या

श्री पद्मप्रभ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री चन्द्रप्रभ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

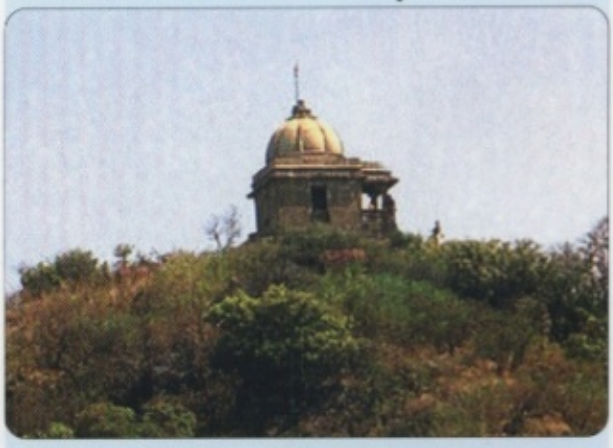

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री सुविधिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

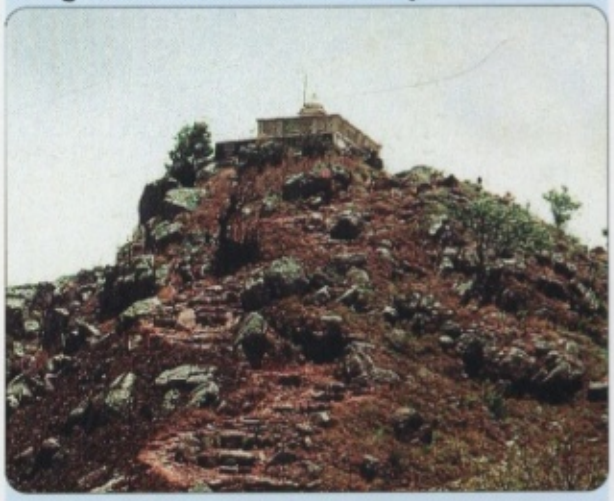

श्री शीतलनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

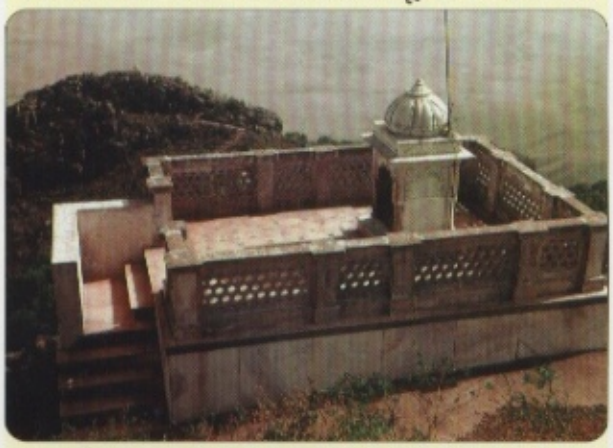

श्री विमलनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री श्रेयाँसनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

श्री अनन्तनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

करते हुए मोक्ष सिधारे हैं । अनेकों अनेक प्रकाण्ड विद्वान आचार्य भगवन्तों ने यहाँ पदार्पण किया है व अनेकों श्रद्धालु भक्तजनों का यहाँ आवागमन हुआ है एवं कई संघ आये है व आते रहते हैं ।

यहाँ की महिमा का जितना वर्णन करें कम हैं । यहाँ की महिमा तो हर तीर्थमाला में व स्तवनों आदि में जन-जन में गाई जाती है ।

अनेक तीर्थंकरों, मुनिगणों की तपोभूमि व निर्वाणभूमि रहने के कारण उन्होंने अपने अन्त-समय में इस पहाड़ पर रहकर धर्मोपदेशना देते हुए इस भूमि के कण-कण को अपने चरणकमलों से स्पर्श किया है । अतः यहाँ का कण-कण महान पवित्र व पूजनीय है । इस भूमि के स्पर्श मात्र से मानव की आत्मा प्रफुल्लित होकर प्रभु के स्मरण में लीन हो जाती है । यहाँ की यात्रा मानव का संकट हरनारी, पुण्योपार्जनकारी व पापविनाशनकारी है ।

यहाँ की भूमि के कण-कण में निर्मलता तो है ही यहाँ के वायु-मण्डल के वातावरण में भी ऐसी अलौकिक शक्ति व गूंज है जिससे मानव अपने आपको प्रभु में खोकर अपने पापों का क्षय करके महान पुण्योपार्जन करता है । आइए हम भी आज प्रभु के निर्वाण स्थलों का स्मरण कर लें ।

प्रातः साढ़े चार-पाँच बजे यात्रा प्रारम्भ करना आवश्यक है । साथ में लकड़ी रखना सुविधाजनक है । भूख सहन न करने वालों के लिये खाने पीने की कुछ सामग्री साथ रखना भी सुविधाजनक होगा । क्योंकि लौटने तक लगभग सायं के चार बज जाते हैं ।

श्री भोमियाजी के मन्दिर से कुछ दूर जाते ही पहाड़ की चढ़ाई प्रारम्भ होती है । यात्रा प्रवास-6 मील चढ़ाव, 6 मील परिभ्रमण, व 6 मील उतराई कुल मिलाकर 18 मील का रास्ता पार करना पड़ता है । इसलिए पहिले श्री भोमियाजी बाबा के दर्शन कर श्रीफल चढ़ाकर आगे चलें ताकि हमारी यात्रा निर्विध्न शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो । भोमियाजी बाबा प्रत्यक्ष व चमत्कारिक हैं । श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते है । यहाँ से लगभग 2 मील चलने पर गंधर्व नाला आता है । इस नाले में हर वक्त पानी रहता है । जल अति ही निर्मल व पाचक है । स्थान बहुत ही रमणीय है । यहाँ पर एक श्वेताम्बर

श्री धर्मनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

श्री शान्तिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

धर्मशाला है, जहाँ पीने के गरम व ठंडे पानी की सुविधा है । प्रत्येक यात्री को लौटते वक्त यहाँ पेढ़ी की तरफ से भाता दिया जाता है । यहाँ से चढ़ाई कुछ कठिन है । लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं । हिम्मत से चढ़िये । आप प्रफुल्लता के साथ वापस उतरेंगे । थोड़ी दूर आगे जाने पर दो रास्ते फंटते हैं। बायें हाथ का राह श्री गोतम स्वामीजी की टूंक होता हुआ जल मन्दिर जाता है व दायें हाथ का डाक बंगला होता हुआ श्री पार्श्वनाथ टूंक पहुँचाता है । ये दोनों मार्ग लम्बे हैं व कठिनाई में दोनों समान है । चढ़ते वक्त जल मन्दिर व लौटते वक्त पार्श्वनाथ टूंक होकर आना ही अनुकूल होता है ।

जलमन्दिर के मार्ग में आधा मील का रास्ता तय करने पर कल-कल मधुर संगीत की स्वर-लहरी गाता हुआ सीता नाला मिलता है जो सदियों से इस भाँति स्वरलहरी गुंजरित करता रहा है । आगे चढ़ाव कुछ और भी कठिन है, जिसे सुगम बनाने के लिए 500 सीढ़ियाँ बनाई गई हैं । लगभग 2.5 मील आगे बढ़ते ही हमारे तीर्थंकर भगवन्तों के निर्वाण-स्थानों पर निर्मित टूँको के दर्शन होते हैं । कुछ टूँके समतल में हैं तो कुछ टेकरियों पर ।

प्रथम टूँक :- लब्धि के दातार भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी की है । इनका निर्वाण-स्थल तो राजगृही या गुणाया है परन्तु दर्शनार्थ यहाँ चरण स्थापित हैं । इनके नाम स्मरण मात्र से मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं । आगे चलने पर दूसरी टूँक :- सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ भगवान की आती है । वैशाख कृष्णा प्रतिपदा को हजार मुनियों के साथ भगवान यहाँ से मोक्ष सिधारे हैं । आगे जाने पर तीसरी टूँक :- श्री ऋषभानन शाश्वत जिन की टूँक आती है । बाद में चौथी टूँक :- श्री चन्द्रानन शाश्वत जिन की टूँक आती है । पश्चात् पाँचवी टूँक :- ईक्कीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ भगवान की टूँक आती है । यहीं से भगवान वैशाख कृष्णा दशमी को पाँच सौ छत्तीस मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । आगे चढ़ने पर छठी टूँक :- अठारहवें तीर्थंकर श्री अर्हनाथ भगवान की आती है । यहीं से भगवान मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । फिर सातवीं टूँक :- उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लीनाथ भगवान की आती है । यहाँ से प्रभु फाल्गुन

श्री कुंथुनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

श्री अरनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

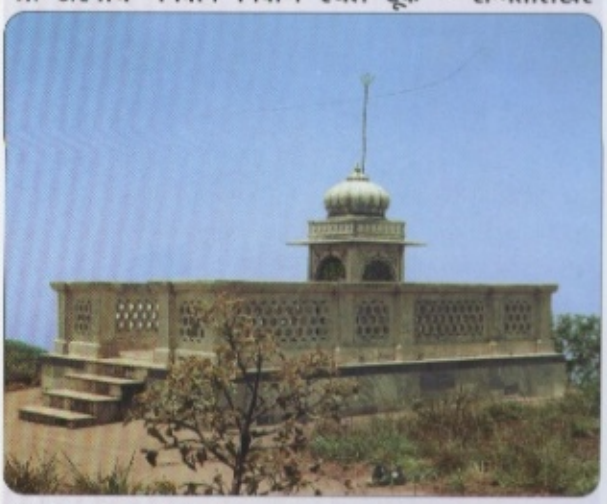

शुक्ला बारस को पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । आठवी टूँक :- ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयाँसनाथ भगवान की है । यहाँ से भगवान श्रावण कृष्णा तृतीया को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे है । नवमी टूँक :- नवमें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ भगवान की आती है । यहाँ से भगवान भाद्रवा शुक्ला नवमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। दशवीं टूँक :- छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान की आती है । यहाँ से प्रभु मार्गशीर्ष कृष्णा ग्यारस को तीन सौ आठ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । आगे ग्यारहवीं टूँक :- बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान की है यहाँ से भगवान ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । अब हमें कठिन व ऊँची टूँक जाना है । वह है बारहवीं टूँक :- आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान की । यहीं से प्रभु भाद्रवा कृष्णा सप्तमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे है । उतरकर आगे चलने पर तेरहवीं टूँक :- श्री आदिनाथ भगवान की आती है। प्रभु तो अष्टापद से मोक्ष सिधारे हैं । इस पावन तीर्थ पर दर्शनार्थ प्रभु के चरण स्थापित हैं । चौदहवीं टूँक :- चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान की है । चैत्र शुक्ला पंचमी को सात सौ मुनियों के साथ यहीं से प्रभु मोक्ष सिधारे हैं । पन्द्रहवीं टूँक :- दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान की है । यहाँ पर भगवान वैशाख कृष्णा द्वितीया को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । सोलहवीं टूँक :- तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ भगवान की आती है । यहाँ से भगवान चैत्र शुक्ला पंचमी को एक हजार मुनिगणों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । सत्रहवीं टूँक :- बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान की है । भगवान चम्पापुरी में मोक्ष सिधारे हैं। यहाँ दर्शनार्थ उनके चरण स्थापित हैं । अठारहवीं टूँक :- चौथे तीर्थंकर श्री अभिनन्दन भगवान की है । यहाँ से प्रभु वैशाख शुक्ला अष्टमी को एक हजार मुनिगणों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । अब हम यहाँ की प्रमुख टूँक पहुँच रहे हैं। यह है यहाँ की प्रमुख टूँक, उन्नीसवीं टूँक :- इस टूँक पर स्थित यहाँ के मुख्य जलमन्दिर का दर्शन होता है। यहाँ के मूलनायक श्री शामलिया पार्श्वनाथ भगवान हैं। कैसी सुन्दर व अलौकिक प्रतिमा है प्रभु की । पवित्र पहाड़ों में हरे-भरे लहलहाते पेड़-पौधों के बीच मन्दिर भी कितना सुन्दर लगता है जैसे दिव्य-लोक में

श्री मल्लिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान निर्वाण स्थल टूँक - सम्मेतशिखर

श्री नमिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

द्वारा निर्मित किया गया हो । यहाँ नहाने -धोने, सेवा-पूजा की उत्तम व्यवस्था है । मन्दिर के पास दो कुण्ड हैं । इन कुण्डों से जितना पानी निकाले तब भी अक्षय नीर बहता ही रहता है । विश्राम के लिये दो छोटी श्वेताम्बर धर्मशालाएँ बनी हुई हैं । यहाँ पूजा सेवा करके साथ जो हो वह खा पीकर आगे चलने की तैयारी करनी है यहाँ से आगे चलने पर बीसवीं टूँक :- श्री शुभ गणधरस्वामी की आती है । आगे इक्कीसवीं टूँक :- पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान की है । प्रभु ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को एक सौ आठ मुनिवरों के साथ यहाँ से मोक्ष सिधारे हैं । पश्चात् बाईसवीं टूँक :- श्री वारिषेण शाश्वताजिन टूँक आती है। आगे चलने पर तेईसवीं टूँक :- श्री वर्धमानन शाश्वत जिन टूँक है । फिर चौबीसवीं टूँक :- पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ भगवान की आती है । यहाँ से प्रभु एक हजार मुनियों के साथ चैत्र शुक्ला नवमी को मोक्ष सिधारे हैं । बाद में पच्चीसवीं टूँक :- सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान की आती है। यहाँ से भगवान ज्येष्ठकृष्णा तेरस को नव सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । अब छब्बीसवीं टूँकः- श्री महावीर भगवान की आती है। यहाँ प्रभु के चरण दर्शनार्थ स्थापित हैं । प्रभु तो पावापुरी से मोक्ष सिधारे हैं । पश्चात् सत्ताइसवीं टूँकः- सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की है । यहाँ से प्रभु फाल्गुन कृष्णा सप्तमी को पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । आगे अट्ठाइसवीं टूँक :- तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान की है । यहाँ से भगवान आषाढ़कृष्णा सप्तमी के दिन छ सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं । आगे चलने पर उन्तीसवीं टूँक :- द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान की आती है । यहाँ से प्रभु चैत्र शुक्ला पंचमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष पधारे हैं । अब तीसवीं टूँक :- श्री नेमिनाथ भगवान की आती है । प्रभु के चरण दर्शनार्थ स्थापित हैं । प्रभु तो गिरनार पर्वत पर मोक्ष सिधारे हैं । अब आगे जो दिखाई देती है वह है इस यात्रा की अन्तिम सर्वोच्च टूँक जिसके शिखर का दर्शन 30-40 मील दूर से होता है वह है इकत्तीसवीं टूँक :- तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की । इसे मेघाडम्बर टूँक भी कहते हैं । इस टूँक पर दो मंजिल का शिखर युक्त मन्दिर बना हुआ है । नीचे की मंजिल में भगवान श्री पार्श्वनाथ के प्राचीन चरण स्थातिप हैं । श्री पार्श्वनाथ भगवान श्रावण शुक्ला अष्टमी को तैंत्तीस मुनियों के साथ यहीं से मोक्ष सिधारे हैं । आखिर में पार्श्वनाथ भगवान यहाँ से मोक्ष जाने के कारण इस पर्वत का नाम भी जनसाधारण में पारसनाथ पहाड़ पड़ा । सरकारी दस्तावेजों आदि में भी पारसनाथ हिल हैं।

इस टूँक पर से चारों ओर दृष्टि फेरने पर अति ही मनोहर दृश्य दिखाई पड़ते हैं । आकाश अपने से बातें करना चाहता है ऐसा प्रतीत होता है । बादलों के समूह अपनी रिमझिम गति से पर्वत से आलिंगित होते ही बरस पड़ते हैं । चमत्कारिक जड़ी-बूटियों और प्रभाविक वनस्पतियों का इस भूमि में भन्डार हैं ।

पूर्व तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाण भूमि होने के कारण श्री पार्श्वनाथ भगवान इस पहाड़ को अति पवित्र, एकान्त, रमणीय, ध्यान के अनुकूल जानकर बार-बार आये । इस प्रदेश के लोगों में धर्मोपदेश करते विचरण किया व मोक्ष को प्राप्त हुए । यहाँ के जनवासियों में आज भी उनके प्रति दृढ़ भक्ति है। लोग उन्हें पारसनाथ महादेव, पारसनाथ बाबा कहकर स्मरण करते हैं । आज भी भगवान के जन्म दिवस पौष कृष्ण दशमी को मेले के दिन जैनेतर भी विपुल मात्रा में आते हैं ।

अब हम इस सर्वोच्चतम टूँक से हमारे तीर्थंकर भगवन्तों व मुनि महाराजों को भावयुक्त वन्दना करके वापस मधुबन लौट रहे हैं । थोड़ी ही दूर पर डाक बंगला है, जहाँ से बांई ओर निमियाघाट का रास्ता जाता है । दूसरा दांई ओर का रास्ता मधुबन जाता है।

मधुबन उतरने पर पुनः भोमियाजी बाबा का दर्शन कर विश्राम करना है । वापस पहुँचने तक 3-4 बज जाते हैं । पहुँचने पर कुछ थकावट-सी जरूर महसूस होती है । क्योंकि कुल 18 मील पार करके आये हैं। परन्तु रात भर में थकावट मिट जाती है ।

इस प्रकार महान पवित्र सम्मेतशिखर पहाड़ की हमारी यात्रा संपूर्ण होती है ।

यहाँ प्रतिवर्ष पौषकृष्णा दशमी व फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा (होली के दिन) को मेला भरता है, जब जैन व जैनेतर विपुल संख्या में भाग लेकर प्रभु-भक्ति में लीन हो जाते हैं ।

अन्य मन्दिर * पहाड़ पर स्थित सारी टूँकों व मन्दिरों का वर्णन विशिष्टता में दे चुके हैं । इनके अतिरिक्त पहाड़ पर कोई मन्दिर या टूँके नहीं हैं । पहाड़ की तलहटी मधुबन में आठ श्वेताम्बर मन्दिर दो दादावाड़ियाँ व एक भोमियाजी महाराज का मन्दिर है। इनके अतिरिक्त दिगम्बर बीसपंथी की कोठी में आठ

श्री पार्श्वनाथ भगवान टूँक - सम्मेतशिखर

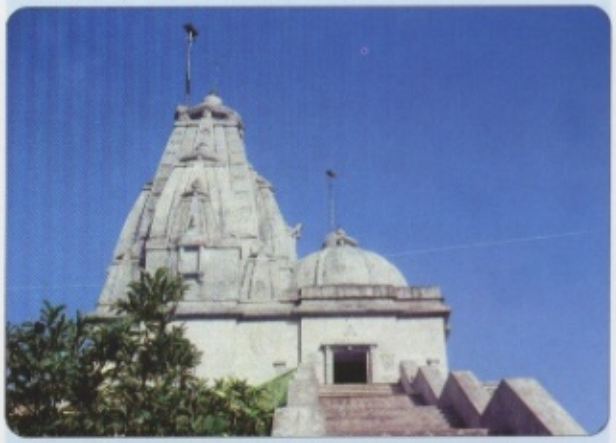

श्री पार्श्वनाथ भगवान निर्वाण स्थल - सम्मेतशिखर

पुनीत पावन सम्मेतशिखर पहाड़ पर प्रभु के निर्वाण स्थलों का दुर्लभ दृश्य

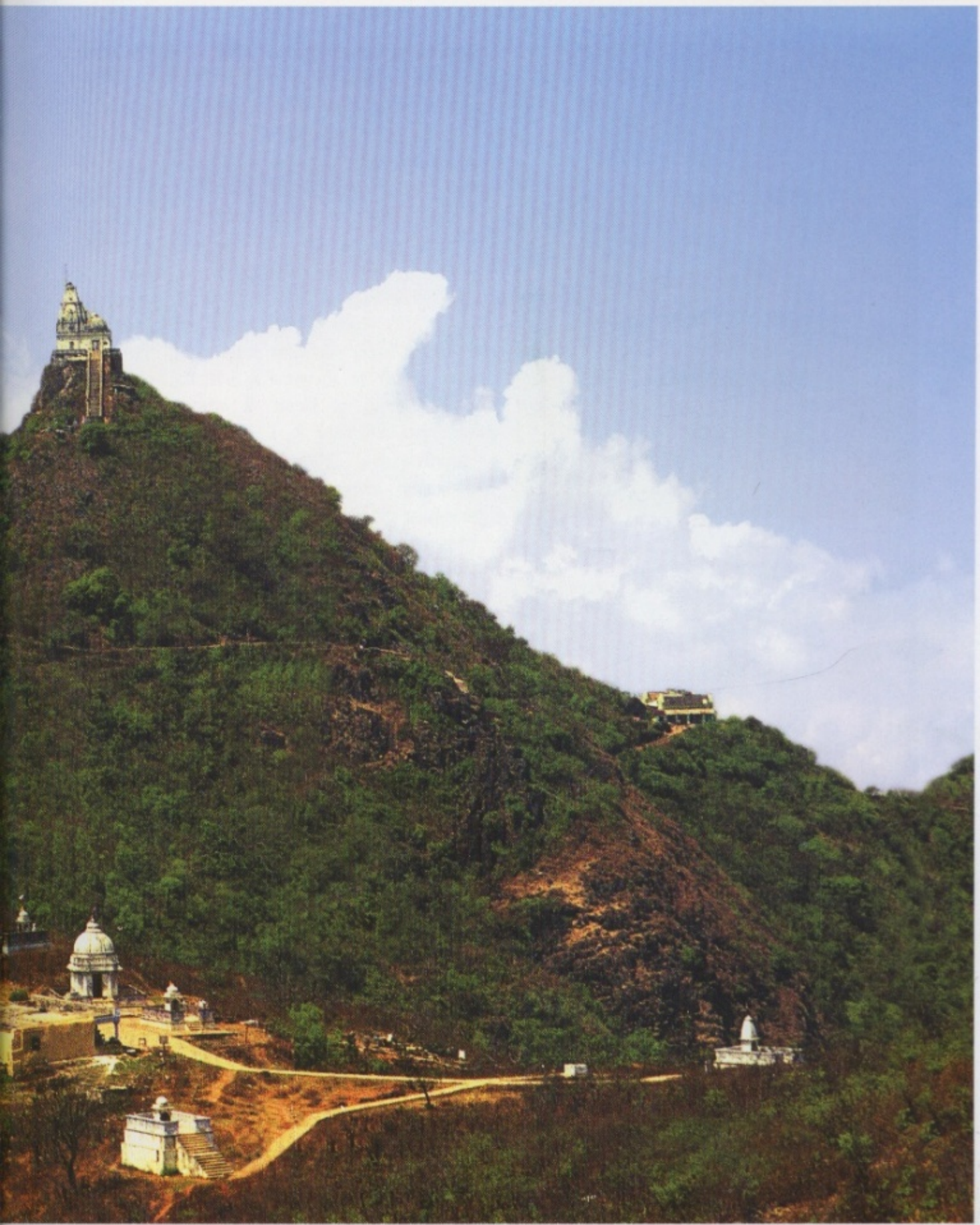

मनोवांछित फलदातार सम्मेतशिखर के अधिष्ठायक श्री भोमियाजी महाराज – मधुबन (सम्मेतशिखर)

रिद्धि के दातार श्री गौतम स्वामीजी महाराज – गुणायाजी

श्री गुणायाजी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री गौतमस्वामी महाराज, पद्मासनस्थ श्वेतवर्ण, लगभग 30 से. मी. । (श्वेताम्बर मन्दिर) ।

तीर्थ स्थल * नवादा स्टेशन से 2 कि. मी. गुणायाजी गाँव में मुख्य मार्ग से 200 मीटर दूर सरोवर के मध्य ।

प्राचीनता * राजगृही के इतिहास में गुणशील चैत्य का वर्णन आता है । लेकिन एक मान्यतानुसार गुणशील का अपभ्रंश ही गुणायाजी नाम हुआ माना जाता है । जहाँ भगवान महावीर का अनेकों बार पदार्पण हुआ व समवसरण रचे गये थे ।

एक और मतानुसार प्रभु के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामीजी ने यहाँ केवलज्ञान प्राप्त किया । कुछ भी हो यह तीर्थ क्षेत्र भी भगवान महावीर के समय का है ।

विशिष्टता * गुणायाजी ही गुणशील चैत्य का अपभ्रंश माना जाने के कारण यहाँ की महान विशेषता हो जाती है । क्योंकि भगवान महावीर का अनेकों बार गुणशील चैत्य में ठहरने का उल्लेख आता है । श्री गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान भी यहीं हुआ माना जाता है । रिधी के दातार श्री गौतम स्वामीजी म. सा. साक्षात् है । उनका प्रत्यक्ष परचा है । आने वाले दर्शनार्थियों की मनोकामना पूर्ण होती है । ऐसा भक्तों द्वारा अभिहित किया जाता है ।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त एक दिगम्बर मन्दिर भी हैं ।

कला और सौन्दर्य * इस जल मन्दिर की निर्माण शैली देखते ही पावापुरी का जल मन्दिर स्मरण हो आता है । मन्दिर के सामने एक तोरण है, जिसकी कला दर्शनीय है ।

मार्ग दर्शन * नजदीक का स्टेशन नवादा 3 कि. मी. है । नवादा गाँव 2 कि. मी. है । नवादा से बस, आटो की सुविधा है । गुणियाजी छोटा गाँव है । पटना से रांची मुख्य मार्ग पर यह गाँव है । मन्दिर से मुख्य सड़क 1/4 कि. मी. है । मंदिर तक कार व बस जा सकती है । पावापुरी से यह स्थल 23 कि. मी. है ।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएं हैं, जहाँ पानी व बिजली का साधन है ।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर भन्डार, श्री गुणायाजी तीर्थ,

पोस्ट : गोनवा - 805 110
जिला : नवादा, प्रान्त : बिहार
फोन : 06324-24045.

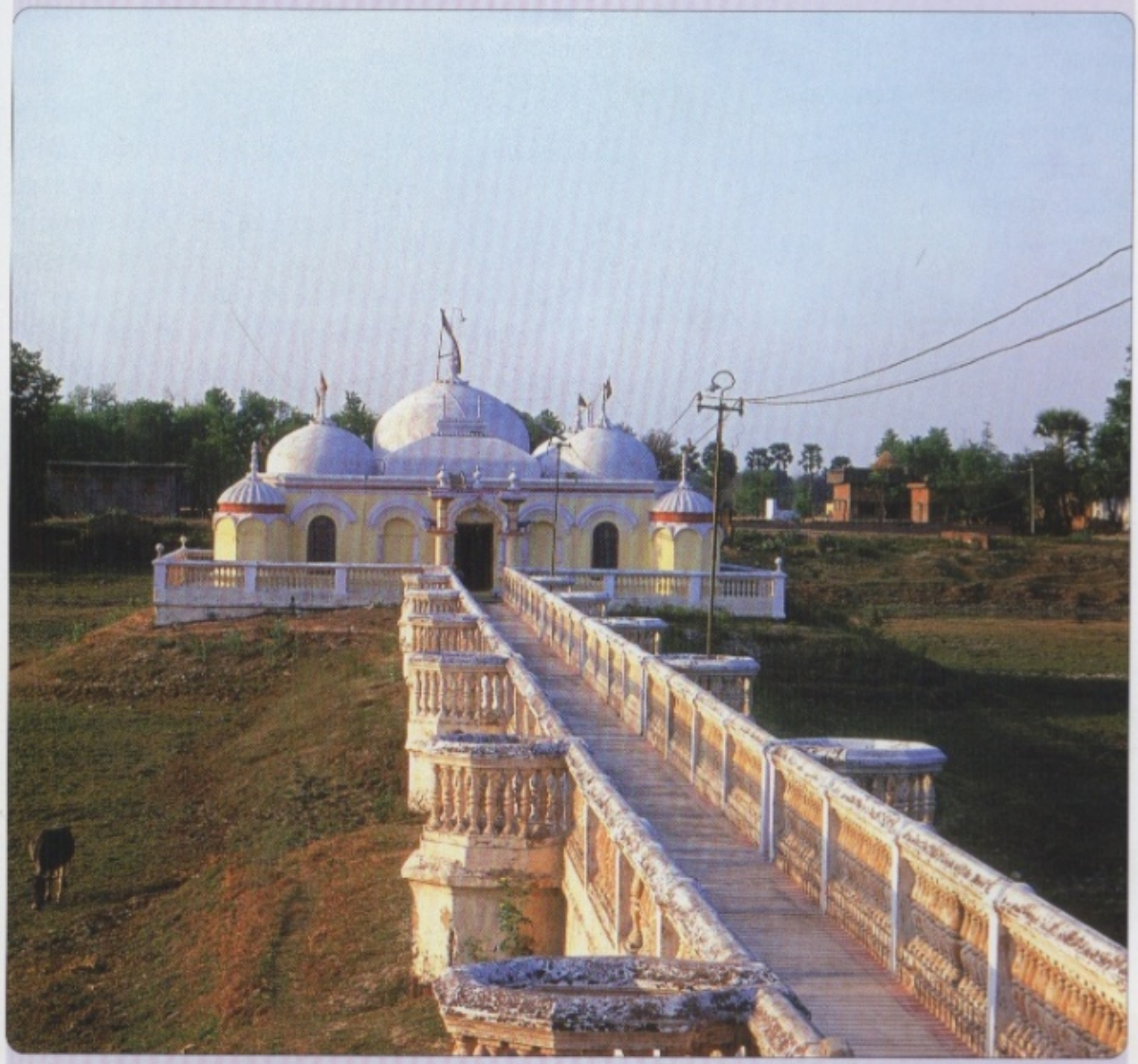

आकर्षक जल मन्दिर - गुणायाजी

श्री पावापुरी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, चरण पादुका, श्याम वर्ण, लगभग 18 सें. मी. । (श्वेताम्बर जल मन्दिर) ।

तीर्थ स्थल * पावापुरी गाँव के बाहर सरोवर के मध्य ।

प्राचीनता * यह क्षेत्र प्राचीन काल में मगध देश के अन्तर्गत एक शहर था । इसे मध्यमा पावा व अपापापुरी कहते थे । भगवान महावीर के समय ही भगवान के परम भक्त मगध नरेश श्रेणिक राजा के पुत्र अजातशत्रु मगध देश के राजा बन चुके थे । आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व अजातशत्रु के राजत्व काल में यहाँ हस्तिपाल नाम का राजा राज्य करता था । सम्भवतः हस्तिपाल माण्डलिक मगधदेश के अन्तर्गत इस गाँव का राजा होगा । उस समय भगवान महावीर चम्पापुरी से विहार करके यहाँ पधारे व राजा हस्तिपाल की रज्जुगशाला में ठहरे ।

चातुर्मास में भगवान के दर्शनार्थ अनेकों राजागण, श्रेष्ठीगण आदि भक्त आते रहते थे । प्रभु ने प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी को निकटवर्ती गाँव में देवशर्मा ब्राह्मण को उपदेश देने भेजा । कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के प्रातः काल प्रभु की अन्तिम देशना प्रारम्भ हुई उस समय मल्लवंश के नौ राजा, लिच्छवी वंश के नौ राजा आदि अन्य भक्तगणों से सभा भरी हुई थी । सारे श्रोता प्रभु की अमृतमयी वाणी को अत्यन्त भाव व श्रद्धा पूर्वक सुन रहे थे । प्रभु ने निर्वाण का समय निकट जानकर अन्तिम उपदेश की अखण्ड धारा चालू रखी । इस प्रकार प्रभु 16 पहर "उत्तराध्यायन सूत्र" का निरूपण करते हुए अमावस्या की रात्रि के अन्तिम पहर, स्वाति नक्षत्र में निर्वाण को प्राप्त हुए । इन्द्रादि देवों ने निर्वाण कल्याणक मनाया व उपस्थित राजाओं व अन्य भक्तजनों ने प्रभु के वियोग से ज्ञान का दीपक बुझ जाने के कारण उस रात्रि में घी के प्रकाशमय रत्नदीप जलाये । उन असंख्यों दीपकों से अमावस्या की घोर रात्रि को प्रज्वलित किया गया । तब से दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ । आज भी उस दिन की

अन्तिम देशना व निर्वाण स्थल मन्दिर – पावापुरी

श्री महावीर प्रभु, चरण पादुका – अन्तिम देशना व निर्वाण स्थल – पावापुरी

यादगार में दीपावली के दिन सारे शहर व गाँव सहस्रों दीपकों की ज्योति से जगमगा उठते हैं ।

प्रभु के निर्वाण के समाचार चारों तरफ फैल चुके। लाखों देव व मानवो की भीड़ प्रभु के अन्तिम दर्शनार्थ उमड़ पड़ी । इन्द्रादि देवों व जन समुदाय ने विराट जुलूस के साथ प्रभु की देह को कुछ दूर ले जाकर विधान पूर्वक अन्तिम संस्कार किया ।

देवी देवतागण व अगणित मानव समुदाय ने प्रभु के देह की कल्याणकारी भस्म को ले जाकर अपने – अपने पूजा गृह में रखा । भस्म न मिलने पर उस भस्म में मिश्रित यहाँ की पवित्र मिट्टी को भी ले गये जिससे यहाँ गड्ढा हो गया ।

भगवान के ज्येष्ठ भ्राता नन्दीवर्धन ने अन्तिम देशना स्थल एवं अन्तिम संस्कार स्थल पर चौतरें बनाकर प्रभु के चरण स्थापित किये जो आज के गाँव मन्दिर व जल मन्दिर माने जाते हैं ।

जल मन्दिर में चरण पादुकाओं पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं हैं । समय-समय पर इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ । पहले इसवेदी पर चरणों के पास सं. 1260 ज्येष्ठ शुक्ला 2 के दिन आचार्य

नवीन सुन्दर समवसरण मन्दिर – पावापुरी

श्री अभयदेवसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठत महावीर भगवान की एक धातु प्रतिमा थी । वर्तमान में यह प्रतिमा गाँव मन्दिर में हैं । आज का गाँव मन्दिर ही हस्तिपाल की रज्जुगशाला व प्रभु की अन्तिम देशना स्थल माना जाता है । इसी स्थान पर दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ जो अभी भी सारे भारत वर्ष में मनाया जाता है ।